तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

मई-2026
रु.20/-

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 12
May - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुपति, श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

23-05-2026 से 31-05-2026 तक

आं.प्र. में स्थित ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित भगवान श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव के अंतर्गत कल्याणोत्सव के लिए आं.प्र. राज्य सरकार की ओर से माननीय मुख्यमंत्री श्री एन.चंद्रबाबु नायडू जी ने धर्मपत्नी सहित भगवान जी को पवित्र रेशमी वस्त्रों को 01-04-2026 को समर्पित किया। वेदपंडितों ने सी.एम. जी को शेषवस्त्र देकर, वेदाशीर्वचन किया। तदनंतर तीर्थप्रसादों के साथ श्री कोदंडरामस्वामी का चित्रपठ को सौंपा दिया। इस संदर्भ में अधिक संख्या में भक्तगण भाग लिया। भक्तों को ति.ति.दे. ने मोती अक्षित और लड्डू प्रसाद को वितरण किया।

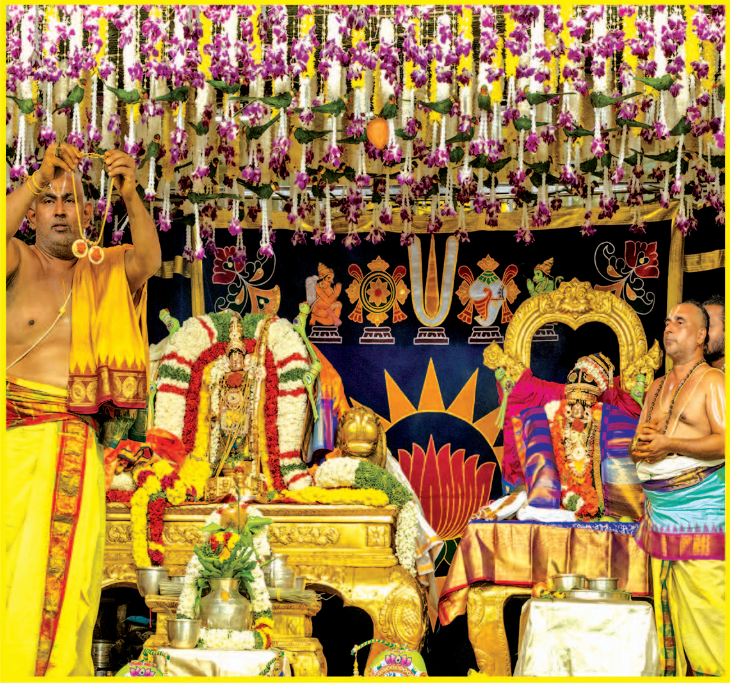

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रृणु।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि॥
(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३९)

हे पार्थ! यह बुद्धि तेरे लिये ज्ञानयोग के विषय में कही गयी और अब तू इसको कर्मयोग के विषय में सुन - इस बुद्धि से युक्त हुआ तू कर्मों के बन्धन को भली-भाँति त्याग देगा यानी सर्वथा नष्ट कर डालेगा।

चालदा हरिनाम सौख्यामृतमु तमकु
चालदा हितवैन चवुलेल्ल नोसग ॥चालदा॥

इदियोकटि हरिनाममिंतैन चालदा
येदरकी जन्ममुल चेरलु विडिपिंच
मदि नोकटे हरिनाम मंत्रमदि चालदा
पदिवेलु नरक कूपमुल वेडलिंच ॥चालदा॥

कलदोकटि हरिनाम कनकाद्रि चालदा
तोलगुमनि दारिद्र्य दोषंबु चेरुच
तेलिवोकटि हरि नाम दीपमदि चालदा
कलुषंपु कठिन चीकटि पारद्रोल ॥चालदा॥

तगु वेंकटेशु कीर्तन मोकटि चालदा
जगमुलो कल्प भूजंबुवलेनुंड
सोगसि ई विभुनि दासुल करुण चालदा
नगवु जूपुलनु नुन्नत मेपुडु जूप ॥चालदा॥

हरिनाम की महिमा का विवरण दिया गया है।

मात्र एक हरि नाम ही जन्म-जन्मों के बंधनों से छुटकारा दिला सकता है। हजारों नरक-कूपों के भय से मुक्ति, हरिनाम से ही मिलती है।

दरिद्रता के दोषों के निवारण के लिए, हरिनाम रूपी कनकाचल पर्याप्त है। विकारों के अंधकार से उजाले की तरफ प्रगति 'हरिनाम' रूपी दीप से हो सकती है। जगत् में 'कल्पतरु' की भाँति, सभी कामनाओं की पूर्ति, यह स्मरण करता है। उत्तम जीवन मार्गों को दिखाने के लिए, हरि भक्तों की करुणा ही पर्याप्त है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 मई-2026 अंक-12

विषयसूची

कूर्म जयंती	डॉ.बी.ए.वी.वर्मा	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	09
हनुमान जयंती (इतिहास, परंपरा और आध्यात्मिक महत्व)	डॉ.टी.लता मंगेश	13
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	16
श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव, तिरुपति	श्री देवपूजला राजकुमार देवरा	18
दैनिक जीवन में पूजा की अनिवार्यता	श्री अवधेश कुमार शर्मा	21
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	24
सीय राममय सब जग जानी	डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी	31
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	34
हेळवनकट्टे गिरियम्मा : हरिदास परंपरा में भक्ति की एक सशक्त ध्वनि	श्रीमती मैथिली राव	37
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	42
सूरजमुखी के बीज	डॉ.सुमा एन.एस.जोशी	44
मई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - विचार ही जीवन हैं	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - श्लोक का महत्व	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 46		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभय देवेरियों सहित श्री गोविंदराजस्वामी, तिरुपति।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री वीरवेंकटसत्यनारायण स्वामी, अन्नवरम, आं.प्र.।

गौरव संपादक
श्री एम.रविचंद्रा, I.A.S.
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

सर्वजगत् लक्ष्मी स्वरूप!

'नियतं कुरु कर्म त्वं कर्मज्यायो ह्यकर्मणः। शरीर यात्रापि च ते न प्रसिद्ध्ये कर्मणः॥' (3-8)

यह श्लोक भगवद्‌गीता का संदेश देता है कि कोई भी व्यक्ति बिना कार्य किए नहीं रहना चाहिए। निष्क्रिय रहने की अपेक्षा कार्य करना श्रेष्ठ है। कार्य करने से ही जीवन-यापन संभव होता है; जो लोग काम नहीं करते, उनके लिए जीवन की यात्रा भी कठिन हो जाती है।

कार्य करना स्वास्थ्य और संपत्ति दोनों का आधार है। स्वास्थ्य और धन-दोनों ही लक्ष्मी के स्वरूप हैं। इसलिए लक्ष्मी देवी की आराधना का वास्तविक अर्थ है आलस्य को त्यागकर निरंतर कर्म में लगे रहना। कुछ लोग शारीरिक श्रम करते हैं, तो कुछ मानसिक परिश्रम करते हैं। इन दोनों के बीच परस्पर निर्भरता का संबंध होता है। अतः किसी को भी किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए; सबको एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए।

''उद्योगिनं पुरुष सिंहं उपैति लक्ष्मी दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषं आत्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यन्ति कोऽत्र दोषः॥''

इस श्लोक में कहा गया है कि जो लोग उत्साह और परिश्रम के साथ कार्य करते हैं, उनके पास लक्ष्मी स्वयं आती है। ''उद्योगिनम्'' - जो पुरुष या स्त्री मेहनत करने वाले होते हैं, वे सिंह के समान होते हैं। ''उपैति लक्ष्मी''- लक्ष्मी देवी स्वयं उनके पास आशीर्वाद देने के लिए आती हैं। कई लोग यह कहते रहते हैं - ''जो होना है, वह तो होगा ही, हमारे हाथ में क्या है?'' यह सोच गलत है। ''दैवं निहत्य कुरु पौरुषम् आत्मशक्त्या'' - मनुष्य को अपनी आत्मशक्ति के बल पर प्रयास करना चाहिए, न कि भाग्य के भरोसे बैठ जाना चाहिए।

राजा जनक, प्रह्लाद, अम्बरीष, धर्मव्याध और भगीरथ जैसे महान व्यक्तियों ने अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए और आत्मचिंतन के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया। श्रम ही लौकिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की समृद्धि का मार्ग है। श्रम से ही संपत्ति की प्राप्ति होती है। समस्त सृजन का मूल श्रम ही है। श्रम के समान जीवन की सुंदरता का कोई दूसरा स्रोत नहीं है - श्रम में केवल सौंदर्य ही नहीं, आनंद भी निहित है।

छोटे-छोटे कार्य करने वाले, खेतों में काम करने वाले, औध्योगिक क्षेत्रों में श्रम करने वाले असंगठित श्रामिकों के बिना उत्पादन रुक जाता है। इससे जीवन स्तर प्रभावित होता है। इसलिए श्रम को संपत्ति और श्रामिक को संपत्ति का सृजनकर्ता मानकर उसका सम्मान करना चाहिए।

धार्मिक व्यवस्थाओं में भी श्रामिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भक्तों के लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराने से लेकर मंदिरों की स्वच्छता बनाए रखने तक, विभिन्न कार्यों में लगे लोगों में भी ईश्वर का अंश होता है - यह समझकर उनका सम्मान करना ही श्रामिक दिवस का वास्तविक महत्त्व है।

श्रम लक्ष्मी का स्वरूप है - और श्रामिक ही सच्चे लक्ष्मी उपासक हैं!

श्रम को नमन - श्रामिकों को वंदन!

कूर्म जयंती

कूर्म जयंती वैशाख पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। आंग्ला मासानुसार अप्रैल के आखिरी सप्ताह या मई के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है। इस वर्ष उसे हम 1 मई में मनाते है। इस जयंती के प्रस्ताव भागवत पुराण, विष्णु पुराण और महाभारत में है।

महाभारत में

महाभारत के आदिपर्व में, क्षीर सागर मंथन के समय इस की चर्चा हुयी। महामुनि दुर्वासा के शाप से देवताओं ने अपनी पूरी शक्ति खो गयी थी। तब देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना करने पर भगवान विष्णु से सुझाव दिया कि क्षीर सागर का मंथन असुरों के साथ करने का आदेश दिया। वैसा करने में उस से अमृत निकलेगा। भगवान विष्णु कछुवा के रूप धारण किया (कूर्मावतार) जो दस अवतारों में दूसरा अवतार था। मंदर पर्वत को मन्थनी बनाकर, वासुकी को रस्सी बनाकर सागर मंथन किया था।

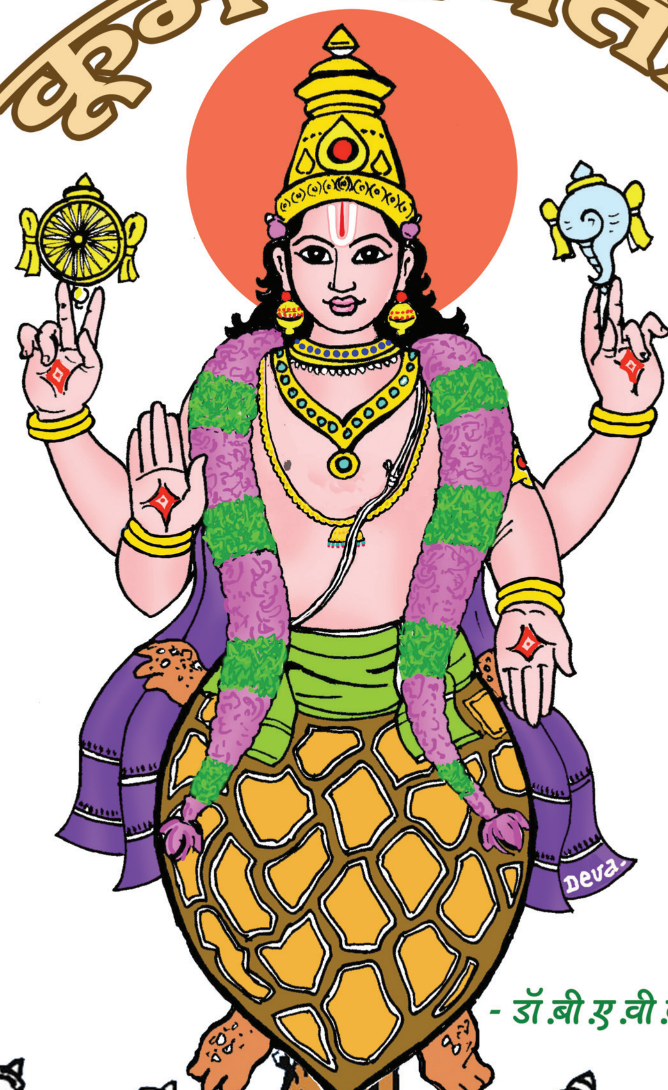

मई 01 2026 को

कूर्म जयंती के अवसर पर...

- डॉ.बी.ए.वी.वर्मा

विष्णु पुराण में

विष्णु पुराण के कई प्रतियों में नवी-दसवीं अध्याय में समुद्र मंथन और विष्णु भगवान का कूर्मावतार का प्रस्तुति है। समुद्र मंथन में जो पहाड मन्थनी बनाया गया, वह डूबने लगा। तब विष्णु भगवान कूर्म रूप धारण कर उस पर्वत को डूबने से बचाया। विष्णु भगवान कूर्म रूप से मंदर पर्वत का पूरा वजन को अपने पीठ पर धारण किया। यहाँ विष्णु भगवान रक्षक, सहायकार और सलाहकार के रूप में विराजित है।

भगवद्गीता

गीता का बोध है कि जिस प्रकार बुद्धिमानी अपने को भौतिक विकारों से बचता है, उसी प्रकार कूर्म अपने अंगों को अपने कवच में खींचकर भौतिक विनाश से बचता है। कूर्म जयंती के दिन प्रत्येक पूजाएँ और अभिषेक होते हैं। श्री विष्णुसहस्र नाम को जपते हैं। समुद्र मंथन को पढ़ते हैं। भक्त लोग उपवास करते हैं। दान, धर्म करते हैं। आंध्रप्रदेश के श्रीकूर्मम (श्रीकाकुलम जिला) जो अनोखा और विशिष्ट था, यह भी बहुत भक्तजन दर्शनीय क्षेत्र और लोक प्रसिद्ध था।

भगवान के हर एक अवतार किसी न किसी सन्देश या संकेत देता है। भगवान कहता है कि ''धर्मसंस्थापनार्थाय, संभवामि युगे युगे'' उसी प्रकार

कूर्म जयंती अपना विशेषता प्रकट करता है। कूर्म - स्थिरता, क्षमता, धर्मरक्षण और शक्ति का प्रतीक है। उसका आध्यात्मिक संकेत है कि बाधाओं में या कष्ट काल में स्थिर रहना है। बिना शोर सहायता सही समय पर देना है। क्यों कि बड़े काम के लिए स्थिर सहायता की जरूरत है। वही काम किया था कूर्म के रूप में भगवान विष्णु। इस से बुद्धिमान देवताओं को यह समझ में आया कि बल गरजता है, गर्व वाद विवाद करता है, लेकिन सहायता स्थिर रहता और निःशब्द भी। वास्तविक और स्थिर शक्ति अपने आप को सराहता नहीं, वह अन्यों को उद्धारता है।

क्षीर सागर मंथन का उद्देश्य अमृत को पाना या अमृत को बाहर निकालना। उस कार्य में पहले आलाहल (कालकूट विष) उद्भव हुआ था। भगवान शिवजी ने अपना कंठ में इनको धारण किया। कामधेनु, ऐरावत, लक्ष्मी देवी, धन्वन्तरी... अमृत के साथ आए थे। ये सभी मानवों को विशेष उपकारी हैं।

भक्तजनों को कूर्मनाध की पूजा जीवन में स्थिरता, आपत्तियों में उनसे बाहर आने की शक्ति, अकस्मात जीवन पतन की रक्षा देता है। जब मानव जीवन सांसारिक बंधनों में डूबती जाती है, तब उसे बाहर आने की क्षमता, सहायता, भौतिक कामनाओं में काबू, आध्यात्मिक भावना, वास्तु दोष निवारण, सम्पदा, भगवदानुग्रह प्राप्ति संभव होता है।

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

बिदाई - उपहार प्रदान करना

"हे शेषगिरिवासा! श्रीसति के साथ यहाँ पर एक मास के लिए रहिए।" इस रूप में प्रार्थना करने पर हरि ने कहा। "यहाँ पर नहीं रहना है। वहाँ पर काम हैं।" कहते "पद्मावती को कैसे भेजना है। शिशु के रूप में हो, प्रौढा के रूप में हो, कभी भी कहीं भी नहीं भेजा।" राजा के इस रूप में कहते चक्री ने सिरि की ओर देखकर इशारा किया। चक्री के भाव को समझ कर लक्ष्मी ने आकाश राज की ओर देखकर इस रूप में कहा। "हे पिता! पद्मावती को उन के साथ भेजा जा सकता है। वही हमारे लिए संतोष की बात है। आप चिंता मत कीजिए। वहाँ पर वकुला मालिका माँ के रूप में उस की देखभाल करेगी। कोई दूसरा नहीं हैं वहाँ" इस प्रकार अनेक रीतियों से प्रीति से बताने पर आकाश राज इस के लिए राजी हुए। तब सिरि को तथा पुत्री को अपनी पत्नी से दिव्याभरण दिलाया। बडे धूमधाम से मोतियों से गोद भराया। हरि को सुवर्णाभरण दिया। वकुला मालिका को भूषण दिया। तब अपनी पुत्री को वकुला को सौंप दिया। हरि ने भी अपने साला वसुदान को दिव्य वस्त्र दिया।

आकाश राज ने तब जगदीश्वर के सामने खडे होकर सद्भक्ति के साथ निगमांत उक्तियों से प्रशंसा करते हुए इस रूप में कहा। "कई दिनों तक निस्संतान रह कर पहले पहल इस पुत्रिका को पाया। इस कन्या की प्राप्ति के बाद विशेष रूप से वुसदान पैदा हुए। उस की देखभाल तुम को ही करनी है। हमारी पद्मावती को आप को दिया। इसलिए आगे आप की कृपा है। पानी में डुबायेंगे या दूध में। भार आप पर ही है।" कहते आकाश राज ने अपनी आँखों से आँसू बहाया। इस रूप में बोलनेवाले आकाश राज को देखकर चक्री ने कहा। "हे मामा! अपनी लाडली की चिंता मत कीजिए। मैं उस की देखभाल करूँगा। आप बडे हैं। संप्रीति से सदा मुझ पर विश्वास कीजिए। आप सदा शांत रहिए। आप को अमल सुख प्राप्त होगा।" इस रूप में चक्री ने कृपा से कहा। तब हरि यात्रा के लिए निकल पडे।

तब आकाश राज ने दो सौ भार शाली तंडूल, तीस भार दाल, चालीस भार इमली फल, सहस्र क्षीर भांड,

सहस्त्रार्ध घी के भांड, द्विशत शर्कर घट, राई, जीरा, मेंती, हींग, काली मिर्च, नमक, वार्ताक, केले, कुष्मांड, कंदमूल आदि शाकों को, चूता, मलक आदि प्रमुख फलों को, दस मधु के घट, अनेक कदली के पर्ण को हय, गज, वृषभों पर लाद कर श्रीनिवासार्पण किया। शत दासीजनों, त्रिशत दासों, दश सहस्त्र गायों को, दिव्याभरण अनेकों को पुत्रिका को उपहार के रूप में दिया। हरि ने अपने सान्निध्य में इन सब को देखकर इस रूप में कहा। ''हे अवनीश! अपनी पुत्री को सीमित रूप से ही उपहार देना था। इतने उपहार हमारे लिए क्यों?'' चक्री के इस रूप में कहते आकाश राज ने कहा। ''हे लक्ष्मीश! आप को किस चीज की कमी है? मैं आप को देने के लिए कितना बडा हूँ? पुत्रिका के साथ प्रेमवश इन्हें दिया है। कम से कम इतना तो ग्रहण कीजिए।'' कहते हाथ जोड दिए।

''अब हमें अगस्त्य महामुनि के आश्रम में जाना है। तुरंत पद्मावती भेजिए।'' हरि ने राजा से इस रूप में कहा। सुन कर राजा ने तुरंत पद्मावती को बुलाया। ''हे पुत्री! अब तुम अपने पति के साथ जाओ।'' पिता के इस रूप में कहने पर तब पद्मावती ने अपनी माँ को आलिंगन किया। धरणी सति ने अपनी पुत्री को देखकर रुआँसी हो गयी। चिंता करते हुए प्रेम से इस रूप में कह। ''चिंता क्यों करती हो बेटी? सिरि के साथ रहो! मुझ से भी अधिक वकुला देवी तुम्हारा आदर करेगी। भक्ति से तुझ पर कृपा करके तुम्हारी देखभाल करेगी।

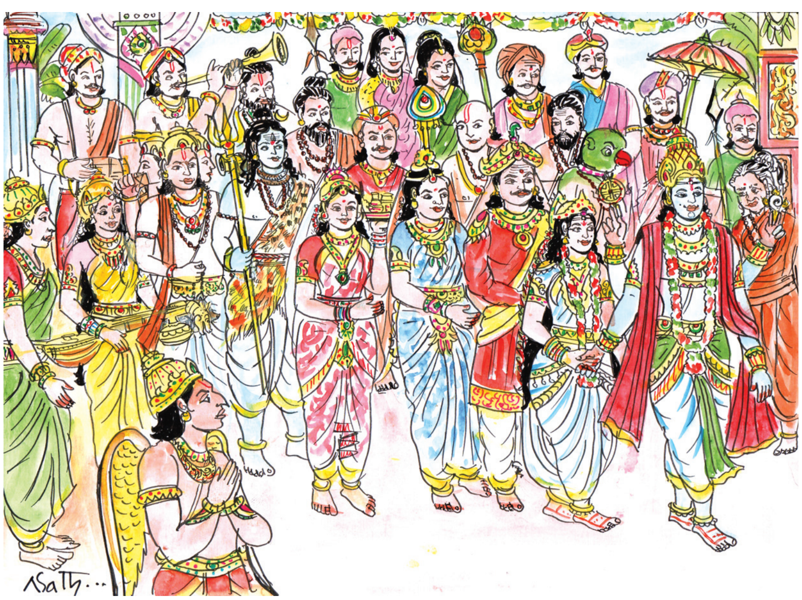

हरि और सिरि तेरे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। तुम्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देंगे। पति से भक्ति के साथ व्यवहार करो। वेंकटगिरि पर सुखी रहो। हम वहाँ पर प्रेम से आते रहेंगे। अब तुम चिंता मत करो।'' इस रूप में कहते पद्मावती के हाथ को लक्ष्मी के हाथों में सौंप दिया। धरणी देवी ने सिरि से तब इस रूप में कहा।

धरणी देवी की विनति - श्री लक्ष्मी का समादर

''हे बेटी सिरि! पद्मावती का मधुसूदन के साथ विवाह किया गया है। इसलिए मेरी पुत्री अब आप की संपदा बनी है। इस पर दया करो बेटी। इस के साथ खेलते रहो। यह अबला है। किसी भी काम को वह नहीं जानती है। क्या सही है क्या गलत है यह भी नहीं जानती है। इसलिए आप लोग अच्छी बुद्धि से इसे सारे काम सिखाना है। दया से उसे अपना लो। मेरे साथ इतने दिन रही है। अब तुम्हारे पास रहने लगेगी। संतानहीन रह कर कई सालों के बाद हम ने इसे प्राप्त किया है। उसे पाला पोष कर अब तुम्हारे हाथों में सौंप दिया। अब सब कुछ तुम्हारे हाथों में है। उसे भार मत समझिए। अब मुझे आगे कुछ नहीं कहना है?'' इस रूप में धरणी देवी कहते रुआँसी हो गयी। तब लक्ष्मी ने इस रूप में कहा। ''हे धरणी देवी! आप अब संतोष के साथ रहिए। चिंता मत कीजिए। तुम्हारी बेटी के साथ सदा करुणा से व्यवहार करेंगे। हरि पर इस का दायित्व है। अब चिंता मत करके पद्मावती को भेजो।

मुझे अलग मत समझिए। मैं भी आप की ही पुत्री हूँ।'' इस रूप में कहते अनेक प्रकार से लक्ष्मी ने धरणी देवी का आदर किया। संतोष के साथ धरणी देवी ने लक्ष्मी से इस रूप में कहा।

''हे बेटी पद्मावती! सुनो। तुम विवेक के साथ काम लो। हरि और सिरि को तुम वेंकटाद्री पर अच्छी सेवा करो। इससे सत्कीर्ति प्राप्त करो। अब तुम सिरि के साथ जाओ।'' इस रूप में धरणी देवी ने उसे समझाया बुझाया। तब पद्मावती माँ की तरफ देखकर आँखों में आंसू भरते सिरि के साथ हरि के अभिमुखी हो गयी।

विवाह के बाद श्रीनिवास का सपरिवार अगस्त्य आश्रम पर जाना

तब श्रीनिवास ने सिरि और पद्मावती को साथ लेकर गरुड़ वाहन पर आरूढ होकर ब्रह्मादियों के साथ अगस्त्य मुनि के आश्रम पहुँच गए। वहाँ पर ब्रह्म रुद्रादियों को भोज करवाया। अगले दिन ब्रह्म, शिव आदि प्रमुख श्रीनिवास की आज्ञा के अनुसार नमस्कार करके अपने अपने निजी स्थानों के लिए लौट गए। तब सिरि ने हरि को नमस्कार करके कोल्हापुर की यात्रा के लिए तैयार होती हुई हरि से कहा। ''हे देव! अब मुझे करवीरपुर जाना है। कृपया करुणा से शीघ्र ही मुझे आज्ञा दीजिए।'' इस रूप में कहने पर तब विष्णु ने अपना सर झुकाकर सिरि के हाथों को अपने हाथ में लेकर कहा। ''हे इंदिरा! मुझे छोड कर जाने के लिए तुम्हारे पैर कैसे तैयार हो गए? तुझे जाने के लिए मैं किस मुँह से कह सकता हूँ? इस रूप में नये बंधुओं की तरह आज्ञा मांगना क्या उचित है? पद्मावती की देखभाल तुझे ही करनी है। तुम्हारे बिना मैं उस का पोषण कैसे कर सकता हूँ। अहो! अगर तुम यहाँ से जाओगी तो मैंने कुबेर से जो उधार लिया। उसे कैसे चुका सकता हूँ। मुझे पराया न समझकर यहाँ पर सब का कर्ता बन कर रहो।'' हरि के इस रूप में कहने पर सुधाब्धि कन्या लक्ष्मी ने मंदहास करते हुए हरि की ओर देखकर इस रूप में कहा। ''अपनी सकल लज्जा को छिपाकर, दिव्य महिमाओं को भी भूल कर आसक्ति से तुम ने पद्मावती के साथ विवाह किया है। तुम को सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब मैं कहीं भी रहूँ मुझे चिंता नहीं है। तुम मुझे यहाँ पर रहने के लिए बिना कहे मुझे शीघ्र ही भेज दीजिए। हे प्राणेश! फिर कभी मैं आऊंगी।'' कहने पर हरि ने सुन कर इस रूप में कहा। ''हे अंबुधि कन्या! जब मैंने राम के रूप में जन्म लिया। तब तुम ने जानकी बन कर लंका में तुम्हारी जगह रहनेवाली वेदवती को स्वीकार करके उस के साथ विवाह करने की बात कही थी। हे मानिनी! उस रहस्य की बात अभी तुम को याद है या नहीं है। अग्नि में बिना विचलित हुए आप्त बन कर तुम्हारा हित करनेवाली वह वेदवती ही पद्म में रहते हुए आकाश राज को प्राप्त हुई है। उन्होंने उसका पालन-पोषण किया। तुम्हारे कहने के अनुसार ही मैंने वेदवती (पद्मावती) के साथ विवाह किया। आप के वचन को मैंने पद्मावती के साथ विवाह करके पूरा किया। इसलिए अनन्य भाव से इस की देखभाल करना अब तुम्हारे सर का ही भार है। फिर तुम कैसे यात्रा के लिए निकल पडी। मुझ पर मोह

दिखाए बिना तुम कैसे पराये की तरह जाने लगी हो। पावन मूर्ति मुनि का पाद मेरे हृदय पर लगने पर तुम रूठ कर चली गयी। तुम से अलग होने के दुःख में मैं सब कुछ छोड कर आर्ति बन कर बांबी में दुबक कर ही रहा। हे इंदुमुखी! अब तुझे प्राप्त किया। फिर से मुझे छोड कर दूर क्यों रहना है? प्रेम से हृदय के आभरण की तरह मेरे ही साथ रहो। शेषाचल पहाड हमारे विहार करने केलिए सुंदर प्रदेश है। इसलिए तुम को जाने नहीं दूँगा। हे भामिनी! फिर से अलग चले जाने की क्या जरूरत है?'' इस रूप में नारायण की आज्ञा होने पर भी बडे आयास से लक्ष्मी ने इस रूप में कहा। ''हे स्वामी! भृगु अज्ञानी बनकर तुम्हारे हृदय पर मारने के कारण वहाँ पर रहे बिना मैं दूर चली गयी। फिर भी प्रत्येक पल तुम्हारे साथ ही रही। दुःखी ही रही। हे त्रिलोकेश्वर! अपनी दुर्गति के बारे में क्या बताऊँ! काल ने मेरे साथ अन्याय किया है। अब भृगु को दोष देना क्यों? मेरे साथ सत्कृपा से व्यवहार कीजिए। हे स्वामी! वह मेरे लिए सब कुछ है। इस सुंदर लावण्य विलासिनी को साथ में रखकर मेरे प्रति तुम कैसे व्यवहार कर सकते हो? हे प्राणेश्वर! मेरे मन का यही अभीष्ट है। तुम जब श्रीराम बने थे तब मैंने सीता के रूप में वेदवती के साथ विवाह करने की बात कही थी। वही वेदवती धरती पर पद्मावती के रूप में आयी है। उस के साथ तुम ने विवाह किया है। इसलिए कुछ कम नहीं है। मन से इस ललितांगी के साथ अब सारे सुखों को तुम प्राप्त करो।'' इस रूप में स्पष्ट रूप से कह कर पद्मावती का आदर करते हुए 'संतोष के साथ हरि की सेवा करते रहो' कहते अनेक प्रकार से समझा बुझा कर तब लक्ष्मी ने वकुला मालिका की ओर देखकर ''इस कन्यामणि का पालन-पोषण अत्यंत आदर के साथ करते रहिए।'' कहा। फिर हरि को नमस्कार करके रमा देवी कोल्हापुर के लिए निकल पडी। वहाँ पर चक्री को हृदय में बसाकर शांति से रही।

तब श्री वेंकटेश्वर ने अगस्त्य मुनि की ओर देखकर इस रूप में कहा। ''हे संयमीश्वर! अब हम वेंकटाचल पहुँचने के लिए निकलेंगे।'' कहने पर मुनींद्र ने कहा। ''हे इंदिरेश! छे मास तक वर के रूप में पहाड पर चढना उचित नहीं है। इसलिए छे मासों तक संतोष के साथ यहीं पर मेरे आश्रम में ही रहिए।'' कहने पर सुन कर वेंकटगिरि पति अपनी सति से वहीं रहने के लिए राजी हुए।

तदुपरांत कुछ मासों के बाद आकाश राज के वैकुंठ सिधरने से वसुदान ने वैदिक कृत्यों को अच्छे ढंग से पूरा किया। उस के बाद दूत के मुँह से यह समाचार पाकर हरि नारायणवनपुर पहुँच गए। वसुदान और तोंडमान से मिल कर शोक प्रकट किया। उन के दुःख का उपशमन किया। फिर अगस्त्य के आश्रम में लौट आये। अपने पिता के लिए दुःखी पद्मावती का आदर किया। इस रूप में बताने वाले सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने कहा।

क्रमशः

हनुमान जयंती

इतिहास, परंपरा और आध्यात्मिक महत्व

- डॉ.टी.लता मंगेश

हनुमज्जयंती के संदर्भ में...

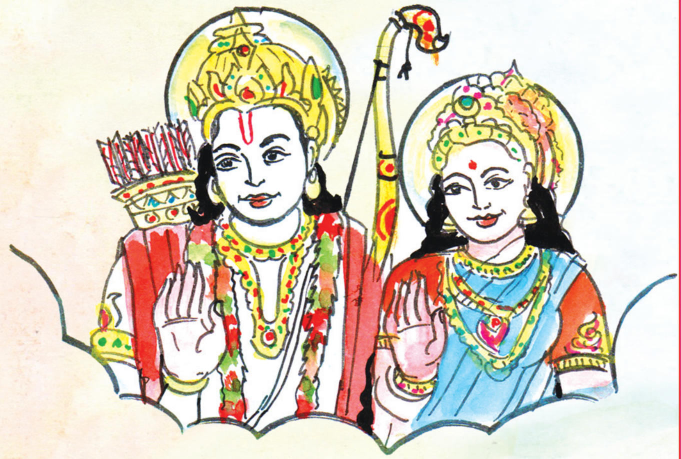

प्रस्तावना

हनुमान जयंती भगवान हनुमान के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाने वाला एक प्रमुख हिन्दू पर्व है। श्री हनुमान भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में भक्ति, बल, सेवा, निष्ठा और ब्रह्मचर्य के आदर्श माने जाते हैं। उनका चरित्र मुख्यतः वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, विभिन्न पुराणों तथा स्तोत्र-साहित्य में वर्णित है।

हनुमान जयंती केवल जन्मतिथि का उत्सव नहीं, बल्कि ''सेवा से सिद्धि'' और ''भक्ति से शक्ति'' की प्रेरणा का पर्व है।

जन्मतिथि और जन्मकथा

हनुमान जयंती की तिथि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न परंपराओं के अनुसार मनाई जाती है- उत्तर भारत - चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, महाराष्ट्र-चैत्र पूर्णिमा (विशेष उत्सव), आंध्र प्रदेश व कर्नाटक - वैशाख कृष्ण दशमी के आस-पास (हनुमान दीक्षा का समापन), तमिलनाडु-मार्गशीर्ष अमावास्या के समीप।

इस प्रकार हनुमान जयंती का उत्सव क्षेत्रीय पंचांग-परंपराओं के अनुसार परिवर्तित होता है, परंतु मूल भावना समान रहती है।

पुराणों के अनुसार अंजना पूर्वजन्म में अप्सरा थीं। शापवश उन्हें वानरी रूप प्राप्त हुआ। उन्होंने शिव की कठोर तपस्या की। उसी समय अयोध्या में राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ का प्रसाद (पायस) वायु के

माध्यम से अंजना तक पहुँचा। शिवांश से उत्पन्न दिव्य तेज के कारण हनुमान का जन्म हुआ।

इसलिए उन्हें ''वायुपुत्र'', ''मारुतिनंदन'' और ''आंजनेय'' कहा जाता है।

बाललीला एवं नामकरण

बाल्यकाल में उन्होंने उगते हुए सूर्य को लाल फल समझकर आकाश में छलांग लगा दी। तब देवराज इन्द्र ने वज्र से प्रहार किया, जिससे उनकी ठोड़ी (हनु) आहत हुई। इसी कारण उनका नाम ''हनुमान'' पड़ा। बाद में ब्रह्म और अन्य देवताओं ने उन्हें अनेक वरदान दिए - अजेय बल, रूप परिवर्तन की क्षमता, वेद-शास्त्र ज्ञान, अमोघ बुद्धि... उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राम की सेवा में किसी स्वार्थ या प्रत्याशा के अर्पित कर दिया।

रामभक्ति का आदर्श

हनुमानजी का चरित्र विशेष रूप से राम के प्रति अनन्य भक्ति के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने सुग्रीव और राम के बीच मैत्री को स्थापित किया, समुद्र लंघन कर लंका पहुँचना, अशोक वाटिका में सीता की खोज, लंका दहन, संजीवनी पर्वत लाना जैसे कार्यों में उनकी भक्ति प्रत्यक्ष दिखती है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति अहंकार का त्याग कर ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण है। रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने उन्हें ''ज्ञान-गुण-सागर'' और ''रामदूत अतुलित बलधामा'' कहा है।

तात्त्विक महत्व

हनुमान का स्वरूप केवल पौराणिक नहीं, बल्कि दार्शनिक भी है: पक्ष, अर्थ, बल, आत्मबल और संयम, भक्ति, अहंकार रहित सेवा, बुद्धि, विवेकपूर्ण निर्णय, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय-निग्रह उनके विशेषताएँ हैं।

भक्ति परंपरा में उन्हें ''चिरंजीवी'' माना गया है - अर्थात् वे आज भी भक्तों की रक्षा करते हैं।

हनुमान जयंती पर तिथि और दो बार मनाने का कारण

हनुमान जयंती साल में दो बार मनाई जाती है क्योंकि हनुमान जी के जन्म और पुनर्जीवन से जुड़ी दो अलग-अलग पौराणिक कथाएँ है। यह परंपरा उत्तर और दक्षिण भारत में भिन्न-भिन्न तिथियों पर प्रचलित है।

पहली हनुमान जयंती

जन्मोत्सव (कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी) वाल्मीकि रामायण के अनुसार, हनुमान जी का जन्म कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को हुआ था। दक्षिण भारत में इसे मुख्य रूप से जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन हनुमान जी की बाललीला और अपार शक्ति की कथाएँ सुनाई जाती हैं।

दूसरी हनुमान जयंती

पुनर्जीवन दिवस (चैत्र शुक्ल पूर्णिमा) बचपन में हनुमान जी ने भूख लगने पर सूर्य को फल समझकर निगलने का प्रयास किया। इंद्र देव ने वज्र से प्रहार किया, जिससे वे मूर्च्छित हो गिर पड़े। पवन देव क्रोधित हो वायु रोक दिए, सृष्टि में हाहाकार मच गया। ब्रह्माजी ने चैत्र पूर्णमा को उन्हें नया जीवनदान दिया और अष्ट सिद्धियां प्रदान कीं। उत्तर भारत में इसे विजय अभिनंदन महोत्सव कहा जाता है। क्षेत्रीय भिन्नता उत्तर भारत में चैत्र वाली अधिक लोकप्रिय है, जबकि दक्षिण में कार्तिक वाली। दोनों ही तिथियाँ हनुमान जी की शक्ति, भक्ति और अमरत्व का प्रतीक हैं। यह दोहरी परंपरा भक्तों को वर्ष भर भक्ति का अवसर देती है। इस दिन भक्त प्रातः स्नान कर व्रत रखते हैं और मंदिरों में दर्शन करते हैं।

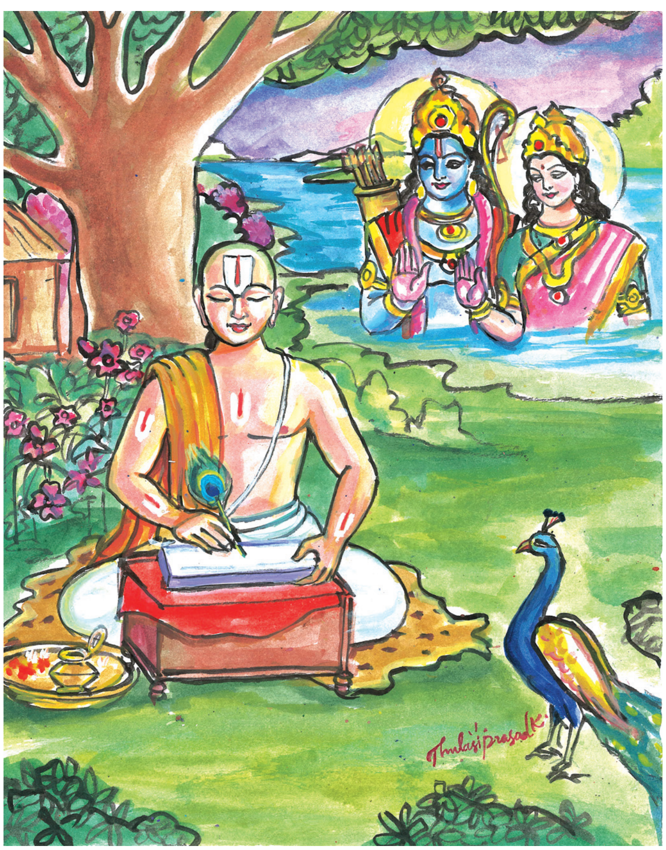

प्रमुख अनुष्ठान

सुन्दरकाण्ड पाठ, हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ, हनुमान अष्टक, बजरंग बाण, तेल एवं सिंदूर अर्पण, प्रसाद वितरण से पूजा संपूर्ण हो जाती है।

विशेषतः काशी के संकट मोचन हनुमान मंदिर तथा अयोध्या के हनुमानगढ़ी में विशाल उत्सव आयोजित होते हैं।

सामाजिक एवं नैतिक संदेश

हनुमान जयंती हमें सिखाती है : सेवा ही सर्वोच्च साधना है। शक्ति का उपयोग धर्म के लिए होना चाहिए। गुरु एवं ईश्वर के प्रति निष्ठा जीवन का आधार है। विनम्रता ही महानता का आभूषण है। हनुमानजी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपनी शक्ति का श्रेय स्वयं को नहीं, बल्कि रामकृपा को देते हैं।

निष्कर्ष

हनुमान जयंती केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन का पर्व है। यह हमें स्मरण कराता है कि सच्चा बल बाहुबल नहीं, बल्कि आत्मबल है, सच्ची विजय अहंकार त्याग में है, और सच्ची भक्ति सेवा में है। हनुमानजी का चरित्र भारतीय संस्कृति में सदैव प्रेरणास्त्रोत रहेगा। ''रामकाज कीन्हे बिना मोहि कहाँ विश्राम।''

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

इस सबके बाद विशेष ज्योतियों की व्यवस्था, प्रधानतः प्रकाश के लिए, पूजा के लिए फूलों की व्यवस्था तथा अन्न-प्रसादों की व्यवस्था सब मूलविराट की स्थापना के साथ होती रहीं। एक प्रकार से वैभव का आविष्कार भी किया गया। विविध प्रकार के आभरणों और अलंकारों के साथ-साथ सौंदर्य तथा मनोहरता में शालीनता उभरने लगी। तत्पश्चात् विविध प्रकार के प्रार्थना मंदिर कक्ष तथा प्राकार भी व्यवस्थित हुए। उत्सवमूर्तियों के साथ विविध प्रकार के उत्सवों की व्यवस्थाएँ भी शोभा युक्त हुईं। विविध और अनेक प्रकार के वाहनों और रथों का नियमन हो गया। वाद्य यंत्रों के साथ उत्सवों की शोभा बढ़ी। धीरे-धीरे बैल, घोडे, हाथी, ऊँट आदि भी उत्सवों के साथ जुडे। इससे तिरुमल पर विराजमान भगवान श्री वेंकटेश्वर की प्रभावशाली शोभा उद्दीप्त हो गयी। श्री वेंकटेश्वर के उत्सवों का आरंभ लगभग 13वीं शती में हुआ तो 15वीं शती से उनमें विस्तार और उनकी शालीनता में बढोत्तरी दिन-प्रतिदिन होती रही। वैभव की दिशा में प्रगति 15वीं शती तक स्पष्टतः उभर कर दिव्य शोभा से मंडित हो गयी।

मूलविराट स्वामी के अलंकरणों का जहाँ तक संबन्ध है राजकुमारी सामवाय ने श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए आभरणों का प्रावधान किया है। मनवालपेरुमाल (श्री वेंकटेश्वर स्वामी) को एक ''पट्टम्'' सोने का प्रस्तुत किया है जिसमें 6 लाल रत्न, 4 वज्र और 28 मोती जडे हैं। इसे परान्तकदेवी अम्मण, सुंदर चोल परांतक-II की रानी, ने राजराज चोल - I के 16वीं शासन वर्ष में प्रदान किया था (संन् 1001 ई.)। दूसरा आभरण हाथ से संबन्धित है। शायद श्री वेंकटेश्वर भगवान की हथेली को शोभित करनेवाला आभरण ही हो सकता है। इस हथेली को वैकुंठ हस्त और वरदहस्त भी मानते हैं। यह आगे का दाँया हाथ है। हाथ नीचे की ओर चरणों की दिशा में संकेत करता विराजित है। इसे होबल यादव, तंजै के राजा ने 13वीं या 14वीं सदी में अर्पित किया है - (संख्या 116 और 117, जिल्द I)।

जब जटावर्मन सुंदर पाण्ड्य - I ने भगवान के विमान के लिए सुवर्ण कलश प्रदान किया था तब वह भगवान के अलंकरण का एक दूसरा अंग बना। श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए यह ''हेमकलशो-स्थापि'' समर्पण राजा से सन् 1256 ई. में हुआ होगा। राजा ने उस वक्त उत्तर की ओर

विजय यात्रा की थी। उन विजयों से राजा के राज्य का विस्तार कृष्णा नदी तक हुआ। शायद यह विजय यात्रा उनके 5वें और 10वें राज्य वर्षों के बाद हुई होगी। (संख्या 49 और पृ.67-69, जिल्द I)। लगभग उसी समयान्तराल में वीर नरसिंह यादवराय ने विमान को सोने के चद्दर पत्र से मढवाया होगा। इस कार्य के लिए राजा ने अपने ही वजन को तोलकर, उस भार सम सोना मंदिर को अर्पित किया (संख्या 91 और पृ. 104, 105 जिल्द I)।

14वीं सदी के परिलेखों में कुछ मठों के निर्मित होने की बात सामने आती है। ये मठ संन्यासियों और एकांतवासियों के लिए थे। तिरुवेंकटनाथ यादवराय ने अपने 9वें राज्य वर्ष में पोंगलूरु गाँव का आधा भाग (करों का भाग) श्री वेंकटेश्वर भगवान को समर्पित किया (सन् 1330-31 ई.)। यह दान आड़ि मास में संपन्न होनेवाले उत्सव के लिए और दैनिक संधि (अन्न-प्रसाद, सितकरगंडन-संधि) के लिए था। इसे रेचय-दंडनायक के नाम पर सिंगय-दंडनायक ने (सं. 99) प्रारंभ किया तथा पोंगलूर गाँव के स्थानत्तार से उस गाँव की उपज को आडि उत्सव में संधि (नैवेद्य) के नाम पर श्री वेंकटेश्वर को समर्पित करने के लिए प्रार्थना की। यह प्रस्तुति वीर नरसिंह पेरुमाल और तिरुमंगैयाल्वार की मूर्तियों की आराधना के लिए भी लक्षित था। ये दोनों मूर्तियाँ तिरुपति में प्रतिष्ठित हैं। इसके साथ-साथ सितकरगंडन्-संधि मठ में रहनेवाले 32 श्रीवैष्णवों के भोजन के लिए व्यवस्था की सूचना उसमें मिलती है। अगर उससे कुछ बचे तो उसका उपयोग पुष्प-वाटिका की सिंचाई और अन्य धार्मिक वितरणों के लिए खर्च करने की दिशा सूचित है (संख्या 102)। संख्या 104 श्रीरंगनाथ यादवराय (सन्. 1339-40) के तीसरे शासन वर्ष से संबन्धित है। इससे हमें विदित होता है कि दो सितकरगंडन मठ थे - एक तिरुपति में और दूसरा तिरुमल पर। दो पुष्पवाटिकाएँ भी तिरुमल के मठ के साथ थे - यथा अरिशाणालयन नंदनवनम् और वंशठकोपन नंदनवनम्। ये मठ सिंगय द्वारा कुछ संन्यासियों के अधीन रखे गये। इन संन्यासियों में एक प्रमुख एकांतवासी को सौंपा गया जिसने 1000 पणम् दिये। उनके निधन के बाद संपत्तियाँ पुनः सिंगराय के पास चली गयीं। उसके बाद सिंगराय की अनुमति से एक और एकांतवासी को 400 पणम् मंदिर के खजाने में अदा करने पर अंतरित हुई हैं। इन परिदानों को स्वीकार कर एकांतवासी को (शियर या जियर) उत्सवमूर्तियों के लिए आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था करनी है। उत्सव दिनों में चौथे दिन की व्यवस्था (अन्न-प्रसाद आदि) तथा आखेट उत्सव की व्यवस्था करनी है। दो पुष्प वाटिकाओं में रहते हुए उन्हें निभाना भी है। साथ-साथ यह भी सूचना मिलती है कि उन मठों की आमदनी से कुछ आभूषण भी बनाकर भगवान श्री वेंकटेश्वर को अलंकृत किया गया (संख्या 162)। इस मठ में रहनेवाले संन्यासी (जीयर स्वामी) को मंदिर की कुछ सेवाएँ भी संपन्न कराना है। इस प्रकार सिंगय दंडनायक द्वारा स्थापित सितकरगंडन मठ का संबन्ध भी जीयर (या) जीयंगार स्वामी से जुडता है। इस स्वामी का श्री वेंकटेश्वर भगवान और श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर से संबन्धित सेवाओं के संबन्ध की परंपरा भी जुडती मिलती है।

16वाँ अध्याय समाप्त

क्रमशः

श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव, तिरुपति

- श्री देवपूजला राजकुमार देवरा

श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर भारत के आंध्रप्रदेश के तिरुपति जिले के तिरुपति शहर के बीचों-बीच स्थित एक प्राचीन हिंदू वैष्णव मंदिर है। यह मंदिर 12वीं सदी में बनाया गया था और 1130 AD में वैखानस परंपराओं के अनुसार स्वामी रामानुज द्वारा इसकी प्राण-प्रतिष्ठा की गई थी, और दिव्य प्रबंधम पाठ की देखरेख करने वाले पांचरात्र जीयर ने इसकी देखरेख की थी। यह मंदिर तिरुपति की सबसे पुरानी संरचनाओं में से एक है और जिले के सबसे बडे मंदिर परिसरों में से एक है। परम पवित्र तिरुमल पर्वत के नीचे तिरुपति शहर इसी मंदिर के आस-पास बसा है। वर्तमान में मंदिर का प्रशासन तिरुमल तिरुपति देवस्थान (टी.टी.डी.) द्वारा किया जाता है। यह मंदिर तिरुपति रेल्वे स्टेशन के पास स्थित है।

तिरुपति में स्थित भगवान श्री गोविंदराजस्वामी का आकर्षक, स्थापत्य कला, इतिहास और पौराणिक महत्व वाला मंदिर विशिष्टाद्वैत दर्शन के संस्थापक वैष्णव संत रामानुजाचार्य द्वारा निर्मित किया गया था।

मुख्य देवता भगवान गोविंदराजस्वामी हैं, जिन्हें भगवान वेंकटेश्वर का बड़ा भाई माना जाता है। जब भगवान वेंकटेश्वर और राजकुमारी पद्मावती के भव्य और आलीशान विवाह के लिए कुबेर से धन उधार लिया गया था, तो उसे 'कोलगा' नामक यंत्र में मापा गया था। भगवान गोविंदराजस्वामी ने हिसाब करके भगवान वेंकटेश्वर को प्रस्तुत किया। इस प्रक्रिया में वे थक गए और सात फन वाले सर्प पर विश्राम किया। उनकी पत्नी देवी गोदालक्ष्मी उनके पैरों को आराम देने के लिए धीरे से दबा रही हैं। भगवान ब्रह्म कमल पर विराजमान होकर भगवान की नाभि से प्रकट हुए और अन्य देवता उनके चारों ओर खड़े होकर प्रार्थना कर रहे हैं।

इस मंदिर की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि भगवान गोविंदराजस्वामीजी लेटे हुए हैं, इसलिए उनका अभिषेक नहीं किया जाता। अन्य अनुष्ठान तिरुमल स्थित भगवान वेंकटेश्वर मंदिर में किए जाने वाले अनुष्ठानों के समान हैं।

इस मुख्य देवता के निकट भगवान कृष्ण की प्रतिमा है, जिन्हें भगवान पार्थसारथी के नाम से जाना जाता है। इनके बगल में देवी गोदालक्ष्मी की प्रतिमा है। इन गर्भगृहों के बाहर रामानुजाचार्य के साथ श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी और अन्य कई प्रतिमाएँ हैं, जिनकी संख्या लगभग 19 है और समय के साथ बढ़ सकती है।

यह तिरुपति शहर के केंद्र में स्थित है। सामने का राजगोपुरम सात मंजिला है और बहुत ऊँचा है, जिसे दूर से देखा जा सकता है। यह तिरुपति के महत्वपूर्ण और प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है, जो मंदिर वास्तुकला में वैष्णव परंपराओं को दर्शाता है।

शनिवार और त्योहारों के दिनों में दर्शन के लिए भक्तों की लंबी कतारें लगती हैं। पुष्करिणी नदी के जल में उत्सवमूर्ति को नाव में ले जाने वाला झांकी उत्सव (तेप्पोत्सव) यहाँ की अन्य कई पूजाओं में सबसे आकर्षक है। तिरुपति आने पर आपको इस मंदिर के दर्शन अवश्य करने चाहिए। श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर, तिरुपति का राजगोपुरम भव्य है।

स्थापना और महत्व

यह मंदिर 12वीं शताब्दी से भी पुराना है, जिसे वैष्णव संत रामानुजाचार्य द्वारा स्थापित किया गया था, और यह तिरुपति के केंद्र में स्थित है।

इस मंदिर में ब्रह्मोत्सव हर साल वैशाख महीने में मनाया जाता है।

गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव के मुख्य विवरण

इस ब्रह्मोत्सव की अवधि नौ दिवसीय है जो ध्वजारोहण से शुरू होकर चक्रस्नान (पवित्र स्नान) के साथ संपन्न होता है।

श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर, तिरुपति (रेल्वे स्टेशन के पास), आंध्रप्रदेश में स्थित है।

ध्वजारोहण : मिथुन लग्न के दौरान ध्वजस्तंभ पर गरुड़ चित्र वाला पीला वस्त्र फहराया जाता है।

वाहन सेवा : विभिन्न वाहनों (जैसे गरुड़, कल्पवृक्ष, सूर्य/चंद्र) पर माड़ावीथियों पर भगवान गोविंदराजस्वामी की शोभायात्राएँ निकालते हैं।

गरुड़ सेवा : यह विशेष आकर्षण है, जो सबसे महत्वपूर्ण शोभायात्राओं में से एक है।

इतिहास : इस मंदिर की स्थापना 12वीं शताब्दी में संत रामानुजाचार्य ने की थी।

यह उत्सव तिरुमल तिरुपति देवस्थान (टी.टी.डी.) द्वारा आयोजित किया जाता है। मंदिर में ध्वजारोहण

समारोह संपन्न होता है जो नौ दिवसीय वार्षिक ब्रह्मोत्सव के प्रारंभ का प्रतीक है। भगवान महाविष्णु के वाहन भगवान गरुड़ की छवि वाला पवित्र पीला ध्वज, मंदिर के परिसर में स्थित स्वर्ण 'ध्वजस्तंभ' पर शुभ मिथुन लग्न में सुबह मंदिर के पुरोहितों द्वारा वैदिक मंत्रों के पारंपरिक पाठ के बीच फहराया जाता है।

इस ब्रह्मोत्सव में बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं।

श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर के गोपुरम को तिरुपति में वार्षिक ब्रह्मोत्सवों के अवसर पर प्रकाशित किया जाता है। टी.टी.डी. द्वारा संचालित श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर में वार्षिक ब्रह्मोत्सव की पारंपरिक शुरुआत 'ध्वजारोहण' समारोह के साथ होती है। मंदिर के झंडे के ऊपर पवित्र झंडा फहराने वाला अनुष्ठान ध्वजारोहण नौ दिवसीय उत्सव की शुरुआत का संकेत देता है जिसमें मंदिर परिसर के चारों ओर सड़कों पर देवताओं का जुलूस शामिल होता है।

तिरुपति के प्रसिद्ध श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर में नौ दिवसीय वार्षिक ब्रह्मोत्सव एक अत्यंत भव्य और आध्यात्मिक उत्सव है, जो आमतौर पर मई-जून के महीने में आयोजित किया जाता है। यह उत्सव भगवान विष्णु के अवतार गोविंदराजस्वामी को समर्पित है और इसकी शुरुआत ध्वजारोहण (ध्वजस्तंभ पर पवित्र ध्वज फहराने) से होती है, जिसमें गरुड़ वाहन सेवा, रथोत्सव और चक्रस्नान जैसे विशेष कार्यक्रम शामिल हैं।

नौ दिवसीय ब्रह्मोत्सव

ब्रह्मोत्सव में भगवान गोविंदराज और देवी आंडाल/पद्मावती की मूर्तियों को विभिन्न वाहनों पर विशेष जुलूस में निकाला जाता है।

मुख्य आयोजन

गरुड़ सेवा, कल्पवृक्ष वाहन, रथ-यात्रा (रथोत्सव) और चक्रस्नान (अंतिम स्नान) इस महोत्सव के मुख्य आकर्षण हैं। ब्रह्मोत्सव के दौरान शोभायात्राएँ हमें नैनानंद प्रदान करके हमारे हृदय को भक्ति उल्लास आनंद से भर देती है एक दृढ़ आत्म बल का संचार होता है।

2026 में तिरुपति के श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर का वार्षिक ब्रह्मोत्सव पारंपरिक रूप से वैशाख के महीने में आयोजित किया जाएगा।

हालांकि तिरुमल तिरुपति देवस्थान (टी.टी.डी.) द्वारा अधिकारिक कैलेंडर में विशिष्ट तिथियों की घोषणा आमतौर पर उत्सव से कुछ समय पहले की जाती है, लेकिन ऐतिहासिक तिथियों और तेलुगु पंचांग के अनुसार, यह मुख्य रूप से मई 2026 के आस-पास होने की संभावना है।

यह ब्रह्मोत्सव अंकुरार्पण के साथ शुरू होता है और चक्रस्नान के साथ समाप्त होता है। ब्रह्मोत्सव के दौरान भगवान श्री गोविंदराजस्वामी प्रतिदिन सुबह और रात को विभिन्न वाहनों पर नगर भ्रमण करते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण उत्सव

ब्रह्मोत्सव के अलावा, 2026 के शुरुआती महीनों में होने वाले अन्य विशेष कार्यक्रम इस प्रकार हैं: तेप्पोत्सव (नौका विहार उत्सव): 26 जनवरी से 1 फरवरी 2026 तक आयोजित किया गया। हर महीने की पूर्णिमा को 'पूर्णिमा गरुड़ सेवा' को आयोजित होती है। पुष्पयाग महोत्सव आदि के साथ सांप्रदायिक पर्व और उत्सव मंदिर के रीति-रिवाज के अनुसार अत्यंत वैभव से संपन्न किया जाता है।

दैनिक जीवन में पूजा की अनिवार्यता

- श्री अवधेश कुमार शर्मा

वैदिक धर्मशास्त्रों, रामचरितमानस, दृष्टांत और जीवनानुभव के आलोक में एक समग्र अध्ययन करने के पश्चात मनुष्य को ज्ञात होता है कि इनका सार क्या है, राम नाम ही सत्य है, इसका स्मरण करना है मूल कर्तव्य है, पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति ही अन्तिम लक्ष्य होता है।

भूमिका :

पूजा क्यों आवश्यक है - यह प्रश्न ही जीवन का प्रश्न है। मनुष्य का जीवन केवल खाने-पीने, कमाने-सोने और भोग करने के लिए नहीं है। यदि यही जीवन का लक्ष्य होता, तो पशु और मनुष्य में कोई भेद न रह जाता। मनुष्य को मनुष्य बनाता है - विवेक, संस्कार, मर्यादा और आत्मचिंतन। इन सभी का मूल आधार है - 'पूजा।'

भारतीय ज्ञान-परंपरा में पूजा को कोई वैकल्पिक कर्म नहीं माना गया, बल्कि उसे दैनिक जीवन की आधारशिला कहा गया है। पूजा विहीन जीवन वैसा ही है जैसे - बिना दिशा का पथ बिना पतवार की नाव बिना तेल का दीप।

पूजा का वास्तविक अर्थ :

केवल कर्मकाण्ड नहीं, जीवन-संस्कार सामान्य धारणा में पूजा का अर्थ केवल - दीप जलाना, धूप-अगरबत्ती करना, मूर्ति के आगे खड़ा होना मान लिया गया है, परंतु शास्त्रों में पूजा का अर्थ कहीं अधिक व्यापक और गहन है।

पूजा का तात्पर्य है - ईश्वर का निरंतर स्मरण, अहंकार का विसर्जन, कर्तव्य को ईश्वरार्पण भाव से करना, जीवन को मर्यादा और संयम में रखना चाहिए।

रामचरितमानस में स्पष्ट कहता है - *"नहिं हरि भजन बिना सुख लेसा।"*

अर्थात् ईश्वर-स्मरण के बिना जीवन में स्थायी सुख का एक अंश भी संभव नहीं।

दृष्टांत : बिना पूजा का जीवन - बिना लगाम का घोड़ा के समान है किस प्रकार एक दृष्टांत से अवलोकन करते हैं।

एक व्यक्ति के पास शक्तिशाली घोड़ा है, मार्ग भी साफ है, किंतु घोड़े के मुँह में लगाम नहीं है।

परिणाम-घोड़ा दौड़ता है, पर गिरा देता है। कर्म घोड़ा है, पूजा लगाम। कर्म हमें गति देता है, पूजा हमें संयम देती है।

वेदों में पूजा की अनिवार्यता :

ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही पूजा से आरंभ होता है - *"अग्निमीळे पुरोहितं।"*

यहाँ अग्नि केवल अग्नि नहीं, बल्कि - चेतना, शुद्धि, अनुशासन, आत्मजागरण का प्रतीक है। वेदों का संदेश स्पष्ट है - दैनिक आत्मशुद्धि आवश्यक है, और वही पूजा है।

उपनिषदों की दृष्टि से पूजा :

उपनिषद् मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाते हैं - *''तमसो मा ज्योतिर्गमय।''*

पूजा वह साधना है जो - अज्ञान को हटाती है, विवेक जगाती है, आत्मा को प्रकाश देती है, पूजा के बिना उपनिषदों का ज्ञान केवल बौद्धिक रह जाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में पूजा का स्वरूप : भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं ''पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।'' (गीता 9.26)।

इस श्लोक से स्पष्ट है कि - पूजा साधनों से नहीं, पद से नहीं, धन से नहीं, बल्कि भक्ति भाव से होती है। इसलिए पूजा हर मनुष्य के लिए संभव है और हर मनुष्य के लिए आवश्यक भी।

रामचरितमानस में पूजा का आदर्श : 1. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम स्वयं पूजक वनवास जैसे कठिन काल में भी- *''प्रात स्नान करि पूजहि नाथा।''*

भगवान राम का यह आचरण बताता है कि - पूजा संकट में छोड़ी नहीं जाती, पूजा ही संकट से पार लगाती है।

2. शबरी का दृष्टांत : पूजा जाति नहीं देखती।

शबरी - न विदुषी थीं, न कुलीन, न धनवान, पर नित्य... राम-नाम, सेवा, भक्ति करती थीं।

उसका फल क्या प्राप्त हुआ *''प्रेम सहित सबरी रस चाखा।''* पूजा ने शबरी को अमर बना दिया।

दृष्टांत : किसान, बीज और वर्षा।

किसान बीज बोता है, खेत जोतता है - यह कर्म है। पर वर्षा न हो, तो फसल नहीं। कर्म बीज है, पूजा वर्षा। पूजा कर्म को फलदायी बनाती है।

रामचरितमानस - *''होइहै सोइ जो राम रचि राखा।''* यह कथन भाग्यवाद नहीं, बल्कि अहंकार-त्याग सिखाता है।

पूजा और मानसिक स्वास्थ्य : आज का युग, तनाव, भय, अवसाद, असंतोष से पीड़ित है।

रामचरितमानस का समाधान - *''राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।''*

नाम-जप - श्वास को स्थिर करता है, मन को शांत करता है, भय को दूर करता है, आधुनिक मनोविज्ञान भी स्वीकार करता है कि नियमित प्रार्थना मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करती है।

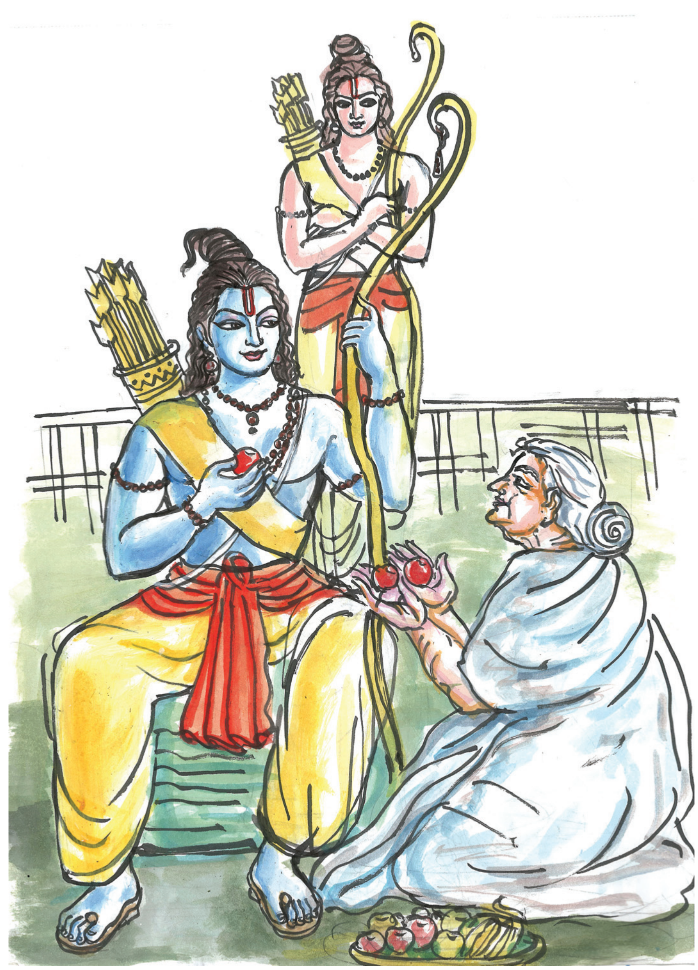

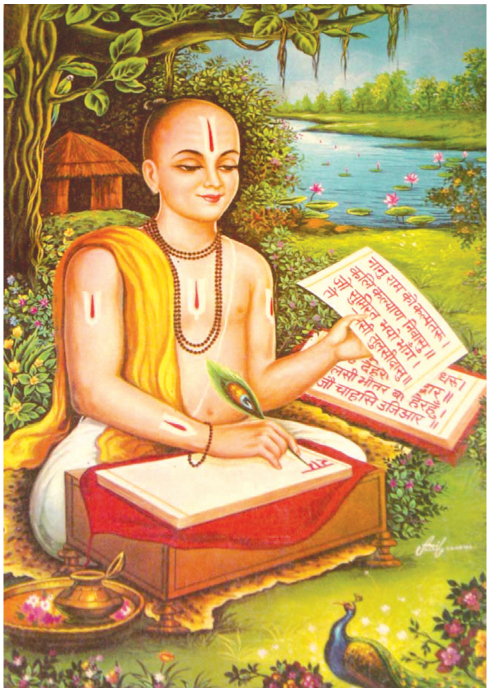

पूजा और नैतिकता : जो व्यक्ति नित्य पूजा करता है, वह जानता है - ''सब घट अंतरि राम समाना।''

फलस्वरूप - वह अन्याय से डरता है, छल-कपट से बचता है, करुणा और दया को अपनाता है।

दृष्टांत : दीपक और पूजा।

दीपक-स्वयं जलता है दूसरों को प्रकाश देता है पूजा करने वाला व्यक्ति-स्वयं सुधारता है समाज को सुधारता है।

तुलसीदास - *''दीप सिखा सम जोग जग माहीं।''*

पूजा और पारिवारिक जीवन : जिस घर में- प्रातः दीप, संध्या आरती, बच्चों को प्रणाम की परंपरा है वहाँ संस्कार पनपते हैं विवाद घटते हैं प्रेम बढ़ता है।

रामचरितमानस - *''जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।''*

पूजा के अभाव का परिणाम : रावण का उदाहरण - रावण - महान विद्वान, शक्तिशाली तपस्वी था भगवान शिव जी का परमभक्त भी था। लेकिन जब वह पूजा करता था उसकी पूजा में अहंकार था समर्पण नहीं था उसका रावण को क्या फल प्राप्त हुआ था, ''अहंकार रावनहि मारा।'' (भावार्थ) रावण स्वयं के अहंकार से ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

पूजा : अंधविश्वास नहीं, जीवन-विज्ञान

पूजा - अंधविश्वास नहीं समय की बर्बादी नहीं कर्म से पलायन नहीं बल्कि-मन, बुद्धि और आत्मा को संतुलित रखने की जीवन-प्रणाली है।

निष्कर्ष - पूजा जीवन की रीढ़, पूजा मनुष्य को - पशुता से मानवता, मानवता से दिव्यता की ओर ले जाती है मनुष्य का जीवन तभी सार्थक होता है, जब वह नित्य ईश्वर-स्मरण और पूजा को अपने आचरण का अंग बनाता है, क्योंकि *''नहिं हरि भजन बिना सुख लेसा''* - भगवान के भजन के बिना जीवन में वास्तविक सुख का एक अंश भी नहीं मिलता। पूजा केवल दीप-धूप नहीं, अपितु अहंकार-त्याग और कर्तव्य-शुद्धि का मार्ग है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम स्वयं *''प्रात स्नान करि पूजहि नाथा''* करके यह सिखाते हैं कि संकट हो या सुख, पूजा कभी छोड़ी नहीं जाती। शबरी का जीवन प्रमाण है कि जाति, विद्या या वैभव नहीं, बल्कि प्रेम-भक्ति ही ईश्वर को वश में करती है - *''प्रेम सहित सबरी रस चाखा''।* उपनिषद् का उपदेश *''तमसो मा ज्योतिर्गमय''* पूजा द्वारा ही संभव होता है, क्योंकि वही मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है। गीता कहती है कि *''पत्रं पुष्पं फलं तोयं''* - भावपूर्ण अर्पण ही सच्ची पूजा है। जो व्यक्ति यह जान लेता है कि *''सब घट अंतरि राम समाना''*, वह पाप और अन्याय से स्वयं दूर हो जाता है। जिस घर में पूजा है, वहाँ सुमति और संपत्ति दोनों निवास करती हैं - *''जहाँ सुमति तहँ संपति नाना''।* अतः कलियुग में मनुष्य के उद्धार का सरल मार्ग यही है कि वह नित्य पूजा और नाम-स्मरण को अपनाए, क्योंकि रामचरितमानस का अंतिम संदेश - *''कलियुग केवल नाम अधारा।''*

इस कलिकाल में तो ईश्वर का नाम स्मरण करने से ही पाप ताप संताप मिट जाते हैं।

दृष्टांत : रामचरितमानस, वेद, उपनिषद्, गीता, पुराण।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

101. तिरुक्कूडल (कूडलळहर सन्निधि, मदुरै)

चेन्नै - तिरुच्चि - मदुरै - रेल मार्ग में, मदुरै बडा जंगशन है - बडा शहर है। मंदिर राह के बीच में स्टेशन से लगभग 3 कि.मी. है।

मूलमूर्ति - कूडलळहर - पूर्वाभिमुखी। आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - मधुरवल्लि - (अलग सन्निधि) वकुलवल्लि, वरगुणवल्लि, मरकतवल्लि आदि दूसरे नाम हैं।

तीर्थ - हेम पुष्करिणी, चक्र तीर्थ - कृतमाला वे हैं। इसी क्षेत्र में पेरियाल्वार ने पल्लाण्डु गाकर भगवान का मंगलाशासन किया।

एक विशेषता है - विष्णु मंदिर होने पर भी यहाँ नवग्रहों की प्रतिष्ठा की गयी है। कूडल अळहर के ऊपरी प्रथमतल पर रंगनाथ (भुजंग शयन) और सत्यनारायण पेरुमाल है। थोडी दूरी पर हयग्रीव एवं देशिक मंदिर हैं। भगवान के आदेशानुसार यहाँ चार मेघ इकट्ठे हुए। इसलिए तिरुमुकूडल (कूडल - संगम)।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, 12 दिव्य पद।

102. तिरुमालिरुञ्चोलै - (अळहर कोविल)

मदुरै शहर (दिव्य क्षेत्र सं. 101 देखें) से लगभग 18 कि.मी. की दूरी पर है। बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - अळहर, कळळळहर, मालाङ्कारर्, मालिरुञ्चोलै नंबि, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - सुन्दरवल्लि, श्रीदेवी - (अलग सन्निधि)।

तीर्थ - नूपुर गंगा, शिलंबु नदी।

स्थल वृक्ष - वृषभगिरि, चन्दन का पेड।

विमान - सोमसुन्दर विमान।

प्रत्यक्ष - मलयध्वज पांडियन, धर्म देवता। मूलमूर्ति एवं उत्सवमूर्ति दोनों पंचायुध के साथ दर्शन देते हैं। कहा जाता है कि उत्सवर स्वर्ण विग्रह है। पतिनेट्टामपडि करुप्पु-प्रेवश द्वार (गोपुर द्वार) की रक्षा देवता है। यह द्वार हमेशा बन्द रहता है।

इसलिए इसकि उत्तर में जो बडा द्वार है - उसके द्वारा मंदिर में जाते हैं। 4 कि.मी. पहाडी पर चलने पर नूपुर गंगा (शिलंबारु) नामक एक छोटी नगर है। मोटर गाडी से भी जाने की सुविधा है। इस पहाडी के चारों तरह की पहाडियाँ गाय सदृश और यह पहाडी ऋषभ सदृश दीखने से ऋषभाद्रि नाम है। वनगिरि

भी दूसरा नाम है। यहाँ क्षेत्रपालक की एक सन्निधि है। ऐतिह्य है प्रतिदिन मंदिर बंद करने के बाद अर्चक के द्वारा मंदिर की चावी इनको सौंपी जाती है।

मंगलाशासन - 6 आल्वार, 128 दिव्य पद।

103. तिरुमोहूर

मदुरै से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर है। बस स्टैंड से बस जाती है।

मूलमूर्ति - कालमेह पेरुमाल (वळित्तुणैप् पेरुमाल) पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं। दाएँ हाथ वरद हस्त। बाएँ हाथ में गदा।

उत्सवर - तिरुमोहूर आप्तन (पंचायुध से भूषित)।

तायार (माताजी) - मोहूरविल्लि, (मोहनवल्लि, मेहवल्लि) (अलग सन्निधि है)।

तीर्थ - क्षीराब्धि पुष्करिणी।

विमान - चतुर्मुख (केतकि) विमान।

प्रत्यक्ष - ब्रह्म, इन्द्र, अज, रुद्र।

विशेष - आदिशेष शयनमूर्ति की एक सन्निधि भी है। यहाँ चक्रतान आलवान सन्निधि का महत्व है। ओत्तकडै के पास नरसिंह भगवान का मंदिर है।

मंगलाशासन - 2 आल्वार, 12 दिव्य पद।

क्रमशः

तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2026 मई 22 से 31 तक

22-05-2026 शुक्रवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

23-05-2026 शनिवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

24-05-2026 रविवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

25-05-2026 सोमवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

26-05-2026 मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

27-05-2026 बुधवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुड़वाहन

28-05-2026 गुरुवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

29-05-2026 शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

30-05-2026 शनिवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

31-05-2026 रविवार
दिन - पालकी उत्सव, तीर्थवारि, अवभृथ, चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

हनुमान चालीसा

हनुमज्ज्ञयंती के अवसर पर सप्तगिरि पाठकों के लिए हनुमान चालीसा स्तोत्र पठन के लिए दिया गया है।

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज, निजमन मुकुर सुधारि।
वरणौ रघुवर विमल यश, जो दायक फलचारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार।।

''श्री गुरु महाराज के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवीर के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाला है।'' ''हे पवन कुमार! मैं आपको सुमिरन करता हूँ। आप तो जानते ही हैं, कि मेरा शरीर और बुद्धि निर्बल है। मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं ज्ञान दीजिए और मेरे दुःखों व दोषों का नाश कर दीजिए।''

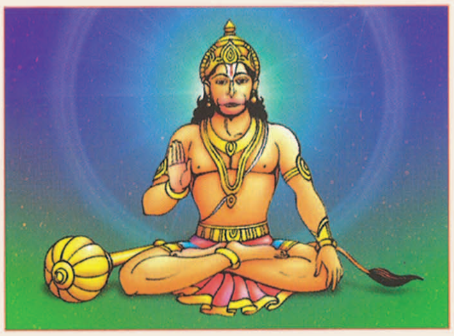

चौपाई

जय हनुमान ज्ञानगुणसागर।
जय कपीश तिहु लोक उजागर।।1।।

''श्री हनुमान जी! आपकी जय हो। आपका ज्ञान और गुण अथाह है। हे कपीश्वर! आपकी जय हो! त्रिलोक में आपकी कीर्ति है।''

रामदूत अतुलित बलधामा।
अंजनिपुत्र पवनसुत नामा।।2।।

''हे पवनसुत अंजनी नंदन! आपके समान दूसरा बलवान नहीं है।''

महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।3।।

''हे महावीर बजरंग बली! आप विशेष पराक्रम वाले है। आप खराब बुद्धि को दूर करते है, और अच्छी बुद्धि वालों के साथी, सहायक है।''

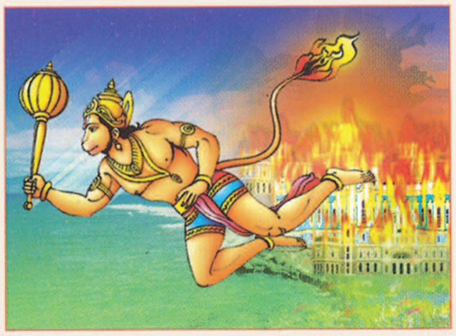

कंचन वरण विराज सुवेशा।
कानन कुंडल कुंचित केशा।।4।।

''आप सुनहले रंग, सुन्दर वस्त्रों, कानों में कुण्डल और घुंघराले बालों से सुशोभित हैं।''

हाथ वज्र औरु ध्वजा विराजै।
कांधे मूंज जनेवू साजै।।5।।

''आपके हाथ में बज्र और ध्वचा है और कन्धे पर मूंज के जनेऊ की शोभा है।''

चित्र सौजन्य - श्री नीलिवेंकटरमणा

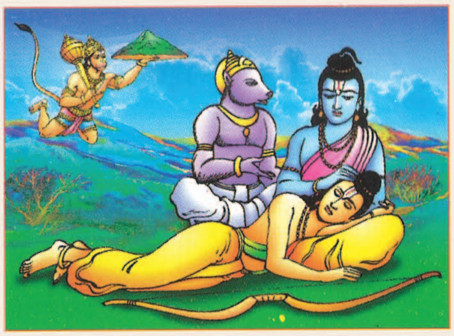

शंकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जगवंदन॥6॥

''हे शंकर के अवतार! हे केसरी नंदन आपके पराक्रम और महान यश की संसार भर में वन्दना होती है।''

विद्यावान गुणी अतिचातुर।
राम काज करिवे को आतुर॥7॥

''आप प्रकान्ड विद्या निधान है, गुणवान और अत्यन्त कार्य कुशल होकर श्रीराम काज करने के लिए आतुर रहते है।''

प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥8॥

''आप श्रीराम चरित सुनने में आनन्द रस लेते है। श्रीराम, सीता और लखन आपके हृदय में बसे रहते है।''

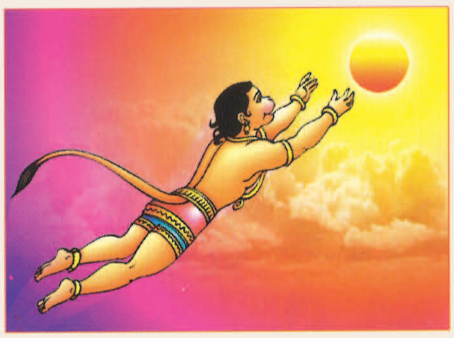

सूक्ष्मरूप धरि सियहि दिखावा।
विकटरूप धरि लंक जरावा॥9॥

''आपने अपना सूक्ष्म रूप धारण करके सीताजी को दिखलाया और भयंकर रूप धारण करके लंका को जलाया।''

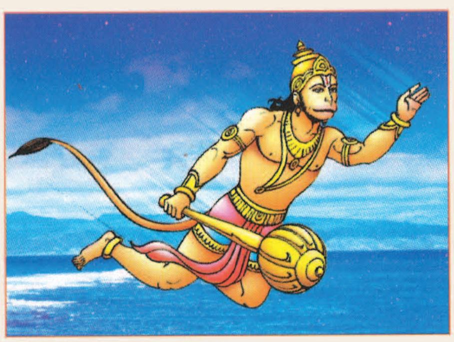

भीमरूप धरि असुर संहारे।
रामचंद्र के काज संवारे॥10॥

''आपने विकराल रूप धारण करके राक्षसों को मारा और श्रीरामचन्द्र जी के उद्देश्यों को सफल कराया।''

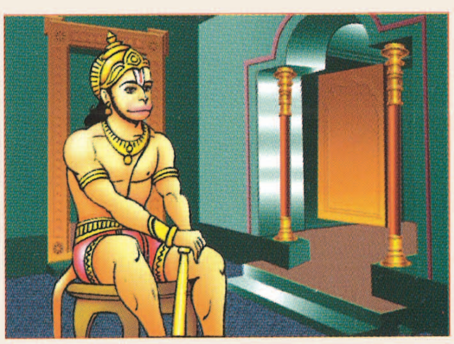

लाय संजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुवीर हरषि वुर लाये॥11॥

''आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को जिलाया जिससे श्री रघुवीर ने हर्षित होकर आपको हृदय से लगा लिया।''

रघुपति कीन्ही बहुत बडायी।
तुम मम प्रिय भरत सम भायी॥12॥

''श्रीरामचन्द्र ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा की तुम मेरे भरत जैसे प्यारे भाई हो।''

सहस वदन तुम्हरो यश गावै।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै॥13॥

''श्रीराम ने आपको यह कहकर हृदय से लगा लिया की तुम्हारा यश हजार मुख से सराहनीय है।''

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा॥14॥

''श्री सनक, श्री सनातन, श्री सनन्दन, श्री सनत्कुमार आदि मुनि ब्रह्मादि देवता नारदजी, सरस्वतीजी, शेषनागजी सब आपका गुण गान करते है।''

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥15॥

''यमराज, कुबेर आदि सब दिशाओं के रक्षक, कवि विद्वान, पंडित या कोई भी आपके यश का पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकते।''

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥16॥

''आपने सुग्रीवजी को श्रीराम से मिलाकर उपकार किया, जिसके कारण वे राजा बने।''

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भय सब जग जाना॥17॥

''आपके उपदेश का विभीषणजी ने पालन किया जिससे वे लंका के राजा बने, इसको सब संसार जानता है।''

युग सहस्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥18॥

''जो सूर्य इतने योजन दूरी पर है की उस पर पहुँचने के लिए हजार युग लगे। दो हजार योजन की दूरी पर स्थित सूर्य को आपने एक मीठा फल समझकर निगल लिया।''

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही।
जलधि लांघि गये अचरज नाही॥19॥

''आपने श्रीरामचन्द्र जी की अंगूठी मुँह में रखकर समुद्र को लांघ लिया, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।''

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥20॥

''संसार में जितने भी कठिन से कठिन काम हो, वो आपकी कृपा से आसानी हो जाते है।''

राम दुवारे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥21॥

''श्रीरामचन्द्र जी के द्वार के आप रखवाले है, जिसमें आपकी आज्ञा बिना किसी को प्रवेश नहीं मिलता अर्थात आपकी प्रसन्नता के बिना राम कृपा दुर्लभ है।''

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा।
तुम रक्षक काहू को डरना॥22॥

''जो भी आपकी शरण में आते है, उस सभी को आनंद व सुख प्राप्त होता है, और जब आप रक्षक है, तो फिर किसी का डर नहीं रहता।''

आपन तेज संहारो आपै।
तीनों लोक हांक तें कांपै॥23॥

''आपके सिवाय आपके वेग को कोई नहीं रोक सकता, आपकी गर्जना से तीनों लोक काँप जाते है।''

भूत पिशाच निकट नहीं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै॥24॥

''जहाँ महावीर हनुमान जी का नाम सुनाया जाता है, वहाँ भूत, पिशाच पास भी नहीं फटक सकते।''

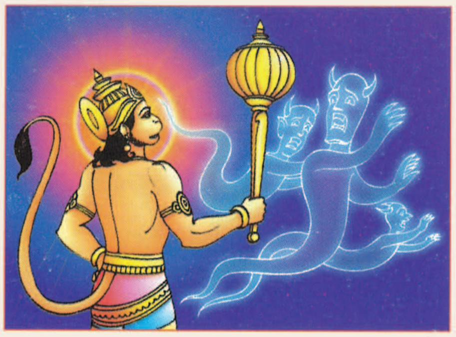

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत वीरा॥25॥

''वीर हनुमान जी! आपका निरंतर जप करने से सब रोग चले जाते है, और सब पीड़ा मिट जाती है।''

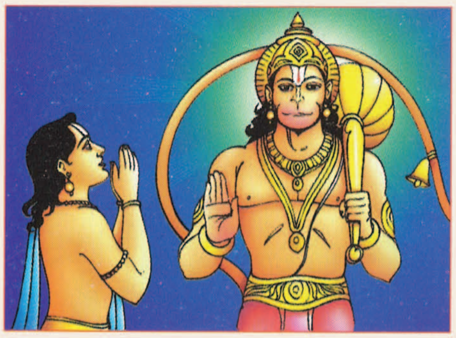

संकटसे हनुमान छुडावै
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥26॥

''हे हनुमान जी! विचार करने में, कर्म करने में और बोलने में, जिनका ध्यान आपमें रहता है, उनको सब संकटों से आप छुड़ाते है।''

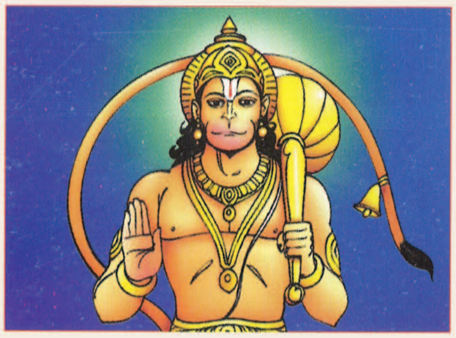

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥27॥

''तपस्वी राजा श्रीरामचन्द्र जी सबसे श्रेष्ठ है, उनके सब कार्यों को आपने सहज में कर दिया।''

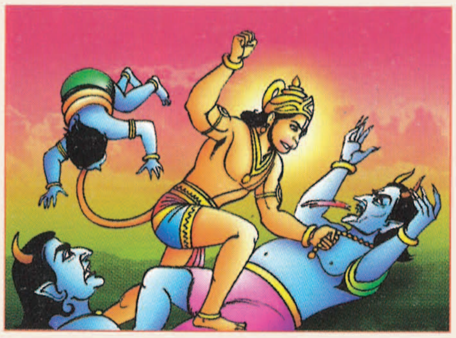

और मनोरथ जो कोयी लावै।
सोयि अमित जीवन फल पावै॥28॥

''जिस पर आपकी कृपा हो, वह कोई भी अभिलाषा करे तो उसे ऐसा फल मिलता है जिसकी जीवन में कोई सीमा नहीं होती।''

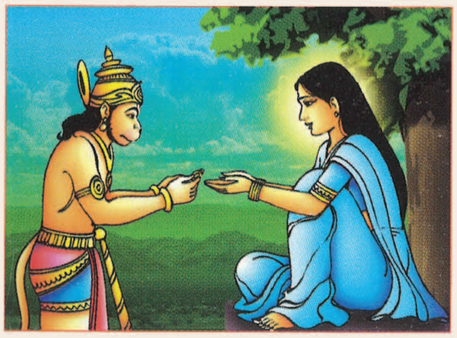

चारों युग प्रताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥29॥

''चारों युगों सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में आपका यश फैला हुआ है, जगत में आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रकाशमान है।''

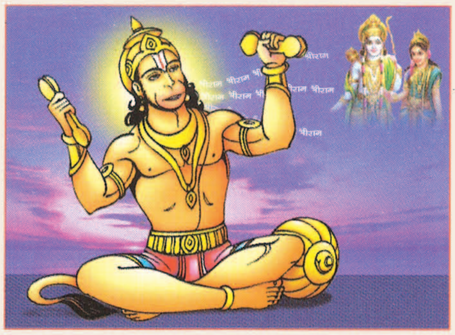

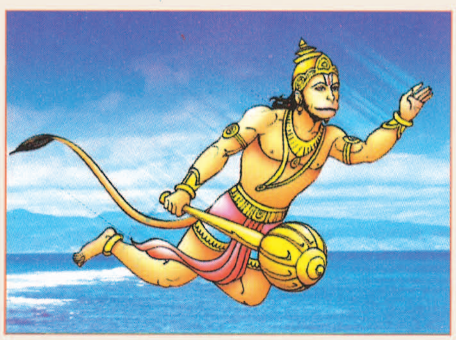

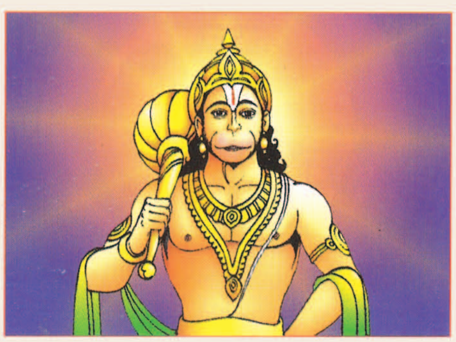

साधुसंतके तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥30॥

“हे श्रीराम के दुलारे! आप सज्जनों की रक्षा करते है और दुष्टों का नाश करते है।”

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
असवर दीन्ह जानकी माता॥31॥

“आपको माता श्री जानकी से ऐसा वरदान मिला हुआ है, जिससे आप किसी को भी आठों सिद्धियाँ और नौ निधियाँ दे सकते है।”

राम रसायन तुम्हरे पासा
सदा रहो रघुपति के दासा॥32॥

“आप निरंतन श्रीरघुनाथ जी की शरण में रहते है, जिससे आपके पास बुढ़ापा और असाध्य रोगों के नाश के लिए राम नाम औषधि है।”

तुम्हरे भजन राम को पावै
जन्म जन्म के दुख बिसरावै॥33॥

“आपका भजन करने से श्रीराम जी प्राप्त होते है, और जन्म जन्मांतर के दुःख दूर होते है।”

अंतकाल रघुपति पुर जायी।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहायी॥34॥

“अंत समय श्री रघुनाथ जी के धाम को जाते है और यदि फिर भी जन्म लेंगे तो भक्ति करेंगे और श्रीराम भक्त कहलायेंगे।”

और देवता चित्त न धरयी।
हनुमत सेयि सर्वसुखकरयी॥35॥

“हे हनुमान जी! आपकी सेवा करने से सब प्रकार के सुख मिलते है, फिर अन्य किसी देवता की आवश्यकता नहीं रहती।”

संकट हरै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलवीर॥36॥

“हे वीर हनुमान जी! जो आपका सुमिरन करता रहता है, उसके सब संकट कट जाते है और सब पीड़ा मिट जाती है।”

जै जै जै हनुमान गोसायी।
कृपा करहु गुरु देव की नायी॥37॥

“हे स्वामी हनुमान जी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो! आप मुझपर कृपालु श्री गुरूजी के समान कृपा कीजिए।”

जो शतबार पाठ कर जोयी
छूटहि बंदि महासुख होयी॥38॥

“जो कोई इस हनुमान चालीसा का सौ बार पाठ करेगा वह सब बन्धनों से छुट जायेगा और उसे परमानन्द मिलेगा।”

जो यह पढै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥39॥

“भगवान शंकर और माँ पार्वती ही साक्षी है कि जो इस हनुमान चालीसा को पढ़ेगा उसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।”

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा॥40॥

“हे नाथ हनुमान जी! तुलसीदास सदा ही श्रीराम का दास है। इसलिए आप उसके हृदय में निवास कीजिए।”

दोहा

पवनतनय संकट हरण मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप॥

“हे संकट मोचन पवन कुमार! आप आनन्द मंगलों के स्वरूप है। हे देवराज! आप श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास कीजिए।”

जय बोलो हनुमान की!!

सीय राममय सब जग जानी

- डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी

भारतीय संस्कृति में रामकथा का अपना विशिष्ट महत्व है। रामकथा का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यही है कि वह भारतवर्ष की यावत्-सांस्कृतिक धाराओं को जोड़ने वाली है। सम्पूर्ण भारतीय जनमानस, सभी वर्णों और वर्गों को जीवन-यात्रा हेतु एक है आदर्श उपस्थित करने वाली अजस्र धारा है। रामकथा ऊँच-नीच, धनवान-गरीब, नर-नारी, शहरी-देहाती अर्थात् समस्त जनता के सभी अंग-उपांगों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा का अजस्र स्रोत हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कहीं न कहीं रामकथा का कुछ अंश मात्र विद्यमान रहता है। रामकथा के कारण ही हमारी गौरवशाली संस्कृति का विश्व क्षितिज पर एक पृथक सम्मान है।

भारतीय संस्कृति त्यागमयी, तपोमयी है। उसमें प्रत्येक वर्ग विशेष के लिए अपने स्तर व स्थिति के अनुसार भोग को त्याज्य कर तपोमयी वृत्ति पर ज्ञान दिया गया है। राम की कथा त्याग-प्रधान है। वह व्यक्तिगत सुख एवं भोग पर कर्तव्योन्मुख लोकहित की प्रधानता का जीवनदर्श है। ऐसा जीवन, जिसमें कोटि-कोटि जीवनों की वाणी देने की शक्ति और वृत्ति है। यही राम कथा भारतीय संस्कृति का आधार-बिन्दु है।

भारतीय संस्कृति के मुख्य स्रोत वेद और उपनिषद् हैं। वेद-उपनिषद् मानव-मात्रा के लिए उपादेय उपदेश हैं। रामकथा के अनेक बिन्दु वेद-शास्त्रों में वर्णित हैं। अब प्रश्न उठता है कि राम को गौरव-गाथा जन-जन में प्रेरणा का बिन्दु क्यों बनी हुई है? राम एक आदर्श थे। उनके जीवन ने प्रत्येक मानव-मात्र को प्रभावित किया है।

विश्व क्षितिज पर राम के जैसा आदर्शशील मनुष्य दूसरा देखने को नहीं मिलता। उनका भातृप्रेम, जनता के प्रति प्रीति, नारी के प्रति सद्भाव आदि हमारे सनातन संस्कृति के चिरन्तन प्रतीक बन गए हैं।

यह हमारी संस्कृति की एक विशिष्ट देन और ऋषि-मुनियों के दिव्य ज्ञान चक्षुओं द्वारा प्रदत्त एक अद्भुत सत्य है कि वे मानव मात्र में ही बन्धुत्व के दर्शन नहीं करते, चेतन-अचेतन, प्राणी-पदार्थ मात्र में भी सिर्फ बन्धुत्व के ही नहीं, अपनी आत्मा के, यहाँ तक कि भगवान के दर्शन करते हैं। महाकवि तुलसी ने 'मानस' में लिखा है-

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।

बन्दऊँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।

सर्वतोन्मुखी भारतीय संस्कृति में प्राण स्वरूप राम नित्य-प्रतिष्ठित हैं। राम कथा जहाँ भारत का सत्य इतिहास है, वहीं ज्ञान-विज्ञान, मोक्ष, प्रेम, धर्म, नीत का सर्वांग सुन्दर शास्त्र है। इसी के द्वारा समाज के उच्चतम स्तर की आध्यात्मिक संस्कृति सामान्य स्तर तक में निर्बाध गति से अक्षुण्ण बनी हुई हैं।

रामकथा, प्रभुराम के महान् दिव्यरूप में सनातन भारत के नित्य सत्य, स्वप्रकाश आत्मपुरुष की ही सर्व चमत्कारी महिमा से मण्डित लीलामयी अभिव्यक्ति है। राम ने भारतीय जनमानस को सन्निकट से अपने मधुर-मनोहर दर्शन कराए हैं। रामकथा में प्रभु और मानव की, नर और नारायण की दूरी दूर होकर प्रभु के परिपूर्ण रूप-स्वरूप का सुन्दर परिचय प्राप्त होता है। जो मानव-मात्र के लिए भारतीय संस्कृति का एक आश्चर्यमय आविष्कार है। प्रभु राम ने मानव रूप में प्रकट होकर, मनुष्यों में उतरकर सम्पूर्ण भारत के हृदय पर नित्य प्रभुत्व की प्रतिष्ठा कर दी है। साथ ही समस्त भारतीय संस्कृति को अपने आध्यात्म भावों से अनुप्रमाणित कर दिया है। रामकथा इतनी विलक्षण रही है कि यह भारत की राष्ट्रीय सीमा के अन्दर ही नहीं अपितु विश्व में भारतीय संस्कृति के रूप में अपना प्रभाव विस्तार का कार्य किया है। श्रीमद्भागवत में एक वर्णन आया है- 'यह आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, गृह-नक्षत्र, प्राणी, दसों दिशाएँ, वृक्ष लता, नदी-समुद्र सभी श्रीहरि के शरीर हैं। सभी रूपों में भगवान ही स्वयं प्रकाशित हैं, यह जानकर सभी को अनन्य भगवत् भाव से प्रमाण करें।'

गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं -

'सीय राममय सब जग जानी।
करउ प्रनाम जोरि जुग पानी।।'

रामकथा मानवता की कथा है तथा रामकथा मानव चरित्र का आदर्श है। प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि वे अपना जीवन राम का जैसा निर्मित कर सुख-शान्ति और उन्नतिशील बनाएँ। रामकथा शान्ति और उन्नतिशील बनाएँ। रामकथा - 'चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्' है।

रामकथा में राम का चित्रण व गौरव-गाथा धर्म प्रधान है। राम अभयदाता, शरणागत वत्सल, सत्यनिष्ठ, शत्रुदमनकारी व धर्मज्ञ हैं। जो उनके गुणों का चिन्तन-मनन करता है व सौभाग्यशाली होकर शान्ति लाभ करता है। उसका मानव-जन्म सार्थक हो जाता है। राजर्षि मनु के अनुसार, 'धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोधहीनता'। यह दस धर्म के लक्षण हैं। यह समस्त सद्गुण राम में सर्वदा विद्यामान रहते हैं। अतएव राम ही साक्षात् धर्म हैं। वाल्मीकि रामायण में भी राम की धर्मप्रियता का यथार्थ वर्णन पढ़ने को मिलता है। महाकवि तुलसीदास ने भी 'रामचरितमानस' में श्रीराम के उत्तम चरित्र का बखान-गान किया है।

त्रेतायुग में सूर्यवंशी चक्रवर्ती महाराजा दशरथ के पुत्र श्रीराम का आविर्भाव मानव जाति की अगणित समस्याओं एवं दिशा निर्देशों के साथ इसी भाव की पूर्ति का प्रयोजन बना।

राम अद्वितीय महापुरुष थे। वे अतुल बलशाली, सौन्दर्य निधान व उच्चशील के कर्मठ व्यक्ति थे। किशोरावस्था में ही उन्होंने धार्मिक अनुष्ठानों में रत विश्वामित्र मुनि के यज्ञ-रक्षा हेतु ताड़का-सुबाहु राक्षस का वध किया। महाराज विदेह की भरी स्वयंवर-सभा में शिवजी का विशाल धनुष को पल भर में तोड़ डाला था जिसके समक्ष बड़े-बड़े राजाओं को नतमस्तक होना पड़ा था। विवाह हो जाने के उपरान्त राजा ने उन्हें युवराज बनाना चाहा, परन्तु विमाता कैकेयी ने जब उन्हें 14 वर्ष का वनवास देने का वर राजा से मांगा तो विरोध में एक शब्द भी न कहकर वे तुरन्त वन जाने को तैयार हो गए। उन्होंने विमाता कैकेयी से कहा-

सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी।
जो पितु मातु वचन अनुरागी।।

राजवैभव, बहुमूल्य वस्त्राभूषणों का परित्याग कर वे भाई लक्ष्मण व पत्नी सीता के साथ सहर्ष वन जाने को तैयार हो गए पिता और माताओं की सुख-सुविधा का ध्यान रखने की प्रार्थना पुरजनों और हित चिन्तकों से कहा-

सोइ सब भांति मोर हितकारी।
जाते रह नर नाहु सुखारी।।

तथा-

मातु सकल मोरे विरह जेहिं न होंहि दुःख दीन।
सोइ उपाइ तुम्ह करेहु सब पुरजन परम प्रवीन।।

राम वनवास का कष्ट सहकर भी भाइयों के प्रीति भाजन बने। यदि पिता की रुचि रखने के लिए घर पर रह जाते तो ही महाराज दशरथ स्वर्गवासी न होते। परन्तु भाइयों के मन-मस्तिष्क पर वैसा प्रभाव न पड़ता, जैसा वन जाने के बाद पड़ा।

श्रीराम के त्याग ने भ्रातृ-भक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।

यह राम के त्याग का ही फल था कि चित्रकूट में राज्य कन्दुक की भांति भाइयों के पैर से ठुकराया गया दिखाई दिया। राम के त्याग ने भरत का हृदय जीत लिया तथा भरत के त्याग ने राम जी का सम्पूर्ण प्रेम प्राप्त कर लिया।

वन में ऋषि-मुनियों से मिलते हुए राम सदैव मर्यादा का ध्यान रखते हैं। वे परात्पर ब्रह्म होकर भी मुनियों को प्रथम प्रणाम करने से नहीं चूकते। वन में जाते हुए गंगा तट पर केवट जैसे निष्काम भक्त से भेंट करते हैं। वन में इन निवासियों को गले लगाकर राम मधुर सामाजिक जीवन का आदर्श स्थापित करते हैं। जो युगों उपेक्षित थे, वे ही रामजी के मित्र बने।

सामाजिक जीवन में सरसता लाने के लिए प्रेम और मैत्री का प्रमुख स्थान है। किष्किन्धा में श्रीराम का सखा प्रेम स्तुत्य है। सुग्रीव से मित्रता होती है और मित्र के कष्ट को देख-सुनकर भी दुःखी न होने वाले को पातकी सिद्ध करते हैं।

राम अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सुग्रीव को किष्किन्धा का राज्य सौंप देते हैं। लेकिन सुग्रीव भी सामान्य कमजोरियों के शिकार हुए बिना नहीं रहते वे राज्य-सुख में फंसकर कर्तव्य पथ से विचलित हो जाते हैं। जिसने निर्भय किया, उसी के कार्य-साधन में दीर्घसूत्रता। राम के नेत्रों में कुछ गरमी आती है वे लक्ष्मण को आज्ञा देते हैं-

'भय देखाई लै आवहु, तात सखा सुग्रीव।'

यद्यपि श्रीराम ने नरलीला की है, फिर भी उनके तात्विक स्वरूप को पहचानने वाले भक्ति की ब्रह्मभावना में कहीं पर भी हल्कापन नहीं आने पाया है।

शरणागत विभीषण पर राम की कृपा आज अनुकरण का विषय है। युद्ध भूमि में राम के पास भौतिकता से समृद्धता न होते देख विभीषण को शंका होती है कि कैसे लंका पर यह विजय प्राप्त कर पायेंगे। विभीषण राम से प्रश्न करते हैं -

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना।
केहि विधि जितब वीर बलवाना।।

इसके उत्तर में राम धर्ममय रथ का बड़ा ही सुन्दर चित्रण करते हैं, जिससे विजय पाना बड़ा ही सरल है। साथ ही युद्ध में राम का धैर्य एवं शौर्य परम अगाध दिखाई देता है। लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने के बाद का विलाप लोक संग्रह के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यही सगुण लीला की विशेषता है। भ्रातृ प्रेम में पिता की आज्ञा को भी तोड़ने की बात वे कह देते हैं।

श्रीराम का राज्य शासन अत्यन्त लोकप्रिय था। प्रजा को प्रसन्न रखने में उनका समस्त जीवन बीत गया। राम राज्य की व्यवस्था महान् आदर्श है। उनके राज्य में किसी को कोई कष्ट न था। प्रजा सुखी थी। आज भी विश्व में जब कोई किसी राज्य की प्रशंसा करता है या महान् आदर्श राज्य की बात करता है, तो वह ऊँची प्रशंसा में 'रामराज्य' से तुलना करने लगता है।

शास्त्र में जितने यज्ञ आते हैं श्रीराम ने सभी यज्ञों का विधिविधान अनुष्ठान किया। इसलिए आज भी भारतीय संस्कृति में रामकथा जन-जन की प्रेरणा बिन्दु बनी हुई है। यह कथा प्रत्येक युग में अटल रहेगी। जैसा कि कहा गया है-

राम कथा जुग-जुग अटल, सब कोई भाखत नेत।
सुरग-बास रघुबर करा, सगरी पुरी समेत।।

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(64वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

जगद्गुरू श्री रामानुजाचार्य का प्रभाव

एक समय श्री रामानुजाचार्य अपने मठ में रामायण युद्ध काण्ड में वर्णित विभीषण शरणागति पर व्याख्यान कर रहे थे। उस समय श्री धनुर्धरदास ने वाल्मीकीय रामायण के प्रति विरक्ति प्रकट करते हुये वे व्याख्यान से उठकर जाने लगे। उनको रोकते हुये यतिराज श्री रामानुजाचार्य बोले- ''हे श्रीवैष्णव श्रेष्ठ धनुर्धरदास! आज तुम इतनी शीघ्रता क्यों कर रहे हो? अपनी अन्यमनस्कता का कारण कहो।'' भगवान श्री रामानुजाचार्य के वचनों को सुनकर श्री धनुर्धरदास हाथ जोड़कर बोले- ''शरणागति करने से पूर्व राक्षसेन्द्र श्री विभीषण ने रावण से कहा कि- मैंने आपके आधीन राज्य, जीवन, पुत्र, मित्र, धन और सुख किंबहुना स्त्री-पुत्रों को भी छोड़कर मैं भगवान श्रीराम की शरण में जा रहा हूँ। भगवान श्रीमन्नारायण की शरणागति करने में स्त्री-पुत्र आदि को प्रतिबन्धक मानकर उनका परित्याग कर अनन्यगति बुद्धिमान विभीषण इक्ष्वाकुवंश में अवतीर्ण भगवान श्रीरामचन्द्र के पादारविन्दों को ही अपना दृढ़ रक्षक मान कर पृथ्वी पर पैर न रखकर आधार रहित आकाश में हाथ जोड़कर खड़े हो गये थे, उनको आकाश में खड़े हुए देखकर बन्दरों ने कहा- ''इसको पकड़ लो, पकड़ लो! पापी रावण के इस अनुज को शीघ्र बाँध लो।'' यह कहकर सभी बलवान बन्दर हाथों से उखाड़े हुए वृक्ष एवं बड़े-बड़े पत्थर लेकर विभीषण को मारने के लिये तैयार हो गये थे।'' यह कहकर धनुर्धरदास बोले कि- ''हे यतिराज! नख-दन्त रूपी आयुध वाले युद्ध में दुर्मदान्ध इन बानरों से सुसज्जित भगवान श्रीरामचन्द्र की गोष्ठी सदा पुत्र, मित्र, कलत्र आदि के हाथ रहने वाले मेरे लिये बेकार है।'' धनुर्धरदास की वाणी सुनकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य बोले- ''वत्स! तुम्हारा कल्याण इसमें है कि तुम यह समझ लो कि यदि मुझे मुक्ति मिलेगी, तो तुम भी जरूर मुक्त हो जाओगे। यदि भगवान श्री यामुनाचार्य मुक्त होंगे एवं यदि श्री महापूर्णाचार्य स्वामीजी मुक्त होंगे तो मुझे भी मुक्ति मिलेगी ही। इसी तरह यदि सभी पूर्वाचार्य मुक्त हैं तो शिष्य परम्परा से उनके शिष्यगण भी मुक्त होंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं। श्री

शठकोपाचार्य स्वामी स्वयं अपने प्रबन्ध ग्रन्थ में कहते है कि- ''मुझे दृढ़ विश्वास है कि मैंने परमपद प्राप्त कर लिया है।'' श्री शठकोपाचार्य स्वामीजी की मुक्ति सिद्ध होने से हम लोगों का परमपद भी सिद्ध ही है। यह निश्चय करके ही संसार में अपना जीवन यापन करो।

तदनन्तर यतिराज बोले- ''श्री महालक्ष्मीजी के पुरुषकार से सभी प्राणियों का मोक्ष निश्चित है। श्री महालक्ष्मीजी भगवान से कभी अलग नहीं होती हैं। इसलिये हम संसारी जीवों और श्री लक्ष्मीजी का भगवान के साथ एक ही सम्बन्ध है। संसारी जीव एवं जगन्माता लक्ष्मीजी के साथ भगवान का नित्य सम्बन्ध है। हे दृढ़व्रत धनुर्धरदास! यदि सबको मुक्ति मिल जाती है तो हम लोग को भी वह अवश्य ही मिलेगी। विभीषण के साथ आये चार राक्षस मन्त्रियों ने कोई अलग शरणागति नहीं की और न भगवान श्रीराम ने उनकी अलग रक्षा की। विभीषण के साथ ही उन लोगों की भी शरणागति और रक्षा हो गई। अतः मैं यदि विष्णु के परमधाम को प्राप्त करूँ तो तुम भी उस पद को अवश्य प्राप्त करोगे। शत्रुघ्न ने उस शरणागत भरत का ही आश्रय लिया, श्री मधुरकवि ने श्री शठकोपाचार्य स्वामी की ही शरणागति की। श्री गोदाम्बाजी ने श्री विष्णुचित्त की शरणागति की। इसी तरह सभी महात्माओं ने अपने गुरुदेव की ही शरणागति करके मोक्ष प्राप्त किया। यह स्पष्ट हो गया कि भगवत् प्राप्ति आचार्यदेश के पालन से ही सम्भावित है। अतः स्वाचार्य और परमाचार्य की आज्ञाओं का पालन करना चाहिये। तत्ववेत्ताओं का कहना है कि जहाँ ज्ञानी आचार्य निवास करते हैं वहीं दिव्यदेश है और वहीं श्रीहरि का वासस्थान है।'' धनुर्धरदास और वहाँ के सभी विद्वत् शिरोमणि (जिन्होंने तत्वार्थ सम्पत्ति प्राप्त करली थी) श्री यतिराज की वेदार्थ सम्मत बात को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये। इसलिये भगवान श्री रामानुजाचार्य का सम्बन्ध मोक्ष का श्रेष्ठ साधन है। उनके श्रीचरणों का कैंकर्य ही प्राप्य है। अन्तर्यामी भगवान श्रीविष्णु के श्रीवैकुण्ठ, वेंकटाद्रि, वारणाद्रि आदि 108 दिव्यदेश बताये गये हैं। वे सभी तथा अन्य देशों में देवरूप से विद्यमान भगवान श्री भूतपुरीवासी यतिराज श्री रामानुजाचार्य के हृदय में विद्यमान हैं। अतः श्री भूतपुरी जगदाचार्य भगवान श्री रामानुजाचार्य की परिचर्या से वासुदेवादि देवताओं के पूजन का फल प्राप्त हो जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं। एक सौ आठ दिव्यदेशों के अन्दर लोकरक्षा की अभिलाषा से निवास करने वाले वासुदेवादि देवताओं के लिये भक्तिपूर्वक किये गये पूजनादि कैंकर्यों के द्वारा जो फल प्राप्त होते हैं वे फल श्री भाष्यकार के पूजन से भी प्राप्त हो जाते हैं।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य जीवों के लिये उपाय स्वरूप और उपेय स्वरूप दोनों ही हैं। उनके नामोच्चारण मात्र से ही पाप नष्ट हो जाते हैं। ''श्रीमते रामानुजाय नमः'' इस मन्त्र के अन्दर 'रामानुज' यह जो चार अक्षर हैं, इसके स्मरण बिना कोई उपाय सांसारिक बन्धनों से छुटने का नहीं है। विद्वानों का मत है कि भगवद्रामानुजाचार्य की पूजा ही परम पुरुषार्थ है। सर्वशास्त्रज्ञ श्री वरदविष्णु आचार्य ने और श्री कुरेश स्वामी ने भी श्रीरंगम् में बड़े विद्वानों के समाज में ही कहा है कि यदि ''रामानुज'' यह चार अक्षर संसार में न होते तो न मालूम हमारे जैसे जीवों की क्या गति होती। यही बात श्रीरंगाचार्य स्वामी ने भी प्रपन्न गायत्री में स्पष्ट कही है और यतिराज के महान वैभव का वर्णन किया है। उन्होंने घोषणा की है कि यतिराज श्री

रामानुजाचार्य के चरणाश्रित महात्मा जिस स्थान पर निवास करते है, वही स्थान दास के लिए परम पवित्र स्थान है। श्रीरंगाचार्य स्वामी की उपर्युक्त वाणी सुनकर हर्षित भगवान श्री रामानुजाचार्य ने उनकी प्रपन्नगायत्री को अंगीकार किया। महात्मा श्रीरंगराज ने लोक कल्याणार्थ उसकी अन्तिम गाथा में चरमार्थ को उदाहृत किया है। माता श्री लक्ष्मीजी एवं पिता भगवान श्री नारायण के पुरुषकार से जीव को श्री रामानुजाचार्य के पादारविन्दों की शरणागति में आना चाहिये। इस तत्वार्थ को जानने वाला संसारी सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है और परमपद प्राप्त करता है। राघवेन्द्र भगवान के पावन एवं अति विस्तृत चरित्र की भाँति श्री रामानुजाचार्य का भी चरित्र अनिर्वचनीय है। कदाचित् कोई प्रबल प्रयास करके समुद्र को तैर सकता है, किन्तु श्री यतिराज के चरित्र का आद्योपान्त वर्णन असम्भव है। मैंने यतिराज के चरित्र को जैसा सुना वैसा उनकी ही कृपा से यहाँ यथामति वर्णन किया है। इसके बाद बुद्धिसागर बहुश्रुत कवीन्द्र महात्मा उनके दिव्य चरित्र का विस्तार करेंगे।

जिस प्रकार महाबली वीर भगवान श्रीरामचन्द्र अपने भाइयों के साथ अयोध्या में राज्य करते थे, उसी तरह लोकपावन श्री रामानुजाचार्य ने अपनी शिष्य मण्डली के साथ श्रीरंगम् में निवास कर सांसारियों की रक्षा की। जैसे रामराज्य में प्रजा रोगरहित, उपद्रवहीन धर्मरत शान्त एवं दीर्घजीवी हुयी, उसी प्रकार इनके द्वारा रक्षित मनुष्य दीर्घजीवी, महात्मा एवं श्रीवैष्णव हुए। यतिराज श्री रामानुजाचार्य की उपस्थिति में सतयुग की तरह ही कलियुग में धर्म चारों चरणों से पृथ्वी पर प्रतिष्ठित हुआ। फलतः समय से वर्षा होती थी, पृथ्वी सस्य श्यामला थी, राजा धर्म परायण थे, प्रत्येक संसारी ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य और क्रोध एवं भय रहित होकर के अपने धर्म में संलग्न और अत्यन्त ही शान्त थे। उनके स्थिति काल में पृथ्वी के प्राणी मत्सर रहित होने से आलस्य, क्रोध एवं भय से मुक्त थे, वैकुण्ठ एवं पृथ्वी में कोई भी अन्तर नहीं रह गया था, चित्रगुप्त और यमराज का व्यापार बिलकुल बन्द हो गया था। राजा रुक्मान्द के शासन काल की ही भाँति पृथ्वी धर्मप्राण थी।

लीला के लिये मनुष्य स्वरूपधारी श्री यतिराज के दिव्य चरित्र को सुनकर मनुष्य पापों एवं भव बन्धनों से छूटकर भगवान विष्णु के परमपद को प्राप्त करता है। वेदान्तादि शास्त्रपारंगत, परमार्थविशारद, भुवन मंगल स्वरूप प्रसिद्ध महान् जगद्गुरु श्री रामानुजाचार्य को बारम्बार प्रणाम है।

।। श्री प्रपन्नामृत का 64वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

जून 2026

02. श्री यमुना नदी का पुष्कर प्रारंभ

06 से 14 तक कार्वेटिनगरम्
श्री वेणुगोपालस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

25 से 29 तक तिरुचानूर
श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव

25 से जुलाई 03 तक अप्पलायगुंटा
श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

26 से 28 तक तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक

हेळवनकट्टे गिरियम्मा : हरिदास परंपरा में भक्ति की एक सशक्त ध्वनि

- श्रीमती मैथिली राव

कर्नाटक में हरिदास परंपरा : एक परिचय

हरिदास परंपरा कर्नाटक के धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है। मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन की बड़ी धाराओं के बीच उभरा हरिदास आंदोलन, पंद्रहवीं और अठारहवीं सदी के बीच मध्वाचार्य के द्वैत दर्शन के प्रभाव के कारण खूब फला-फूला। हरिदास-जिसका मतलब है ''हरि के सेवक'' - संत-कवि थे जिन्होंने संगीत, कविता और कन्नड़ भाषा में दी जाने वाली आध्यात्मिक शिक्षा के जरिएविष्णु (हरि) की भक्ति का प्रसार किया। उनकी रचनाएँ, जिन्हें आम तौर पर देवरनाम या हरि कीर्तन के नाम से जाना जाता है, सिर्फ़ साहित्यिक नहीं थीं, बल्कि आम लोगों के लिए आध्यात्मिक शिक्षा का माध्यम भी थीं।

हरिदास आंदोलन ऐसी दो धाराओं को लेकर आगे बढा जो एक दूसरे के पूरक थे : व्यासकूट और दासकूट। व्यासकूट संत विद्वान थे जो तत्वज्ञान के गूढार्थों को सरल बनाकर समझाते थे, जबकि दासकूट संतों ने भक्ति गीतों और प्रदर्शनकारी कलाओं के माध्यम से उन्हीं बातों को लोकप्रिय बनाया। श्री पुरंदरदास, श्री कनकदास, श्री विजयदास और श्री गोपालदास कुछ ऐसे संत थे जिन्होंने कन्नड़ भक्ति साहित्य के निर्माण एवं विकास में एक बडी भूमिका निभाई। सरल भाषा, रोजमर्रा के जीवन से प्राप्त रूपक और गीतों के माध्यम से, इन संतों ने आत्म-समर्पण, वैराग्य और नैतिक व्यवहार जैसे कठिन आध्यात्मिक विचारों को सामान्य जनता के लिए ग्राह्य बनाया।

हरिदास परंपरा की एक विशेषता यह थी कि इसमें क्षेत्रीय आध्यात्मिकता पर ज़ोर दिया जाता था। धर्म-शास्त्रों में प्रयुक्त संस्कृत के बजाय हरिदासों ने कन्नड़ का उपयोग किया ताकि उनके गीत किसानों, कारीगरों और आम भक्तों तक पहुँच सकें। इन रचनाओं को मंदिरों, घरों और सामुदायिक कार्यक्रमों में मिलकर गाया जाता था। इस तरह संगीत आध्यात्मिक लोकतांत्रीकरण का एक प्रबल माध्यम बन गया। वास्तव में, श्री पुरंदरदास को कर्नाटक संगीत का जनक माना जाता है, और हरिदास की कई रचनाएँ आज भी शास्त्रीय संगीत का हिस्सा हैं।

हरिदास आंदोलन का एक और महत्वपूर्ण पहलू था इसका समावेशी स्वर। यद्यपि संत अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि से थे, तथापि उनकी कविताओं में अक्सर भगवान के सामने भक्तों की बराबरी पर ज़ोर दिया जाता था। उनका कहना था कि भक्ति का मार्ग जाति, वर्ग या ज्ञान से परे सभी के लिए खुला है। इस मायने में, हरिदास आंदोलन सिर्फ़ एक साहित्यिक परंपरा ही नहीं थी, बल्कि एक नैतिक और आद्यात्मिक सुधार आंदोलन भी था।

इस परंपरा की तरक्की के बावजूद, इसके इतिहास में अधिकांशतः पुरुष संतों पर ही ध्यान दिया गया है। महिला भक्तों के योगदान को अक्सर अधिकारिक इतिहास में किनारे कर दिया गया है। या नज़रअंदाज़ कर दिया गया है। फिर भी, आंदोलन में महिलाओं की मौजूदगी-हालाँकि दस्तावेजों में सीमित हैं : भक्ति के अभ्यास, जेंडर और आध्यात्मिक अधिकार के ज़रूरी पहलुओं को दिखाती है। इन महिलाओं में, हेळवनकट्टे गिरियम्मा एक खास हस्ती के तौर पर सामने आती हैं। उनके जीवन और कार्य बताते हैं कि कैसे भक्ति सामाजिक रुकावटों और जेंडर

की उम्मीदों को पार कर सकती है। वह एक ऐसी आवाज़ हैं जो हरिदास परंपरा के अंदर कविता की सृजनशीलता, आध्यात्मिक गति और सामाजिक मज़बूती को मिलाती हैं।

उनके महत्व को जानने के लिए यह आवश्यक है कि हम मात्र उनके जीवनी से परिचित न हों तथापि सर बल्कि उन्हें पूरे भारत में भक्ति आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी के बड़े संदर्भ में भी देखना ज़रूरी है।

महिला संत और इतिहास-लेखन में उनकी उपेक्षा

भारतीय भक्ति इतिहास में महिला रहस्यवादियों और संत-कवयित्रियों के अनेक उदाहरण हैं, जिनकी आध्यात्मिक समझ ने धार्मिक परंपराओं को बहुत अधिक प्रभावित किया। अक्का महादेवी; आंडाल, मीराबाई और लाल देद जैसी हस्तियां भक्ति आंदोलन में महिलाओं की मज़बूत मौजूदगी की गवाही देती हैं। इन महिलाओं ने अक्सर भगवान के साथ अपने गहरे निजी रिश्तों को ज़ाहिर किया और भक्ति और आध्यात्मिक आज़ादी दोनों को दिखाने के लिए कविता का प्रयोग किया। हालंकि, अपनी अहमियत के बावजूद, ऐतिहासिक कहानियों में महिला संतों को अक्सर कम दिखाया गया है। इस उपेक्षा के कई कारण हैं।

प्रथम, पितृसत्तात्मक सामाजिक ढांचों ने महिलाओं की संस्थागत अधिकार और साहित्यिक संरक्षण तक पहुँच को सीमित कर दिया। जबकि पुरुष संतों के पास अक्सर अपने योगदान को संरक्षित करने के लिए शिष्य, मठ, राजा या अधिकारियों की सहायता मिलती थी, महिला रहस्यवादियों के पास ऐसा संस्थागत सहयोग बहुत कम था। इसके परिणामस्वरूप, उनकी रचनाएँ मौखिक रूप में फैलाई गईं और इसलिए कभी-कभी समय के साथ वे खो गईं या बिखर गईं।

दूसरा, इतिहास लिखने में भेदभाव ने एक अहम भूमिका निभाई। शुरुआती साहित्यिक इतिहास अधिकांशतः पुरुष विद्वानों ने लिखे थे, जिन्होंने मशहूर पुरुषों और औपचारिक साहित्यिक कार्यों को प्राथमिकता दी थी। महिलाओं के लिखे भक्ति गीत-विशेषतः वे जो रोज़मर्रा के अनुभवों पर आधारित हों-अक्सर दूसरे दर्जे के या लोकगीत माने जाते थे।

तीसरा, कई महिला संतों ने जानबूझकर शादी, घरेलू जीवन या जाति की पाबंदियों जैसे सामाजिक नियमों को नकार दिया। इस विरोध के कारण कभी-कभी समाज से उनका बहिष्कार होता था, जिससे उनका जीवन विवादास्पद हो जाता था या अधिकारिक इतिहास में दर्ज करना मुश्किल हो जाता था।

हरिदास परंपरा के संदर्भ में, दर्ज महिला संतों की संख्या बहुत कम है। जबकि संगीत और साहित्य के इतिहास में दर्जनों पुरुष संगीतकारों को याद किया जाता है, लेकिन महिलाओं में कुछ ही को याद किया जाता है - जैसे हरपनहल्ली भीमव्वा, हेळवनकट्टे गिरियम्मा, नंजनगूडु तिरुमलांबा, यदुगिरिअम्मा, भगम्मा, तिम्मम्मा आदि असंख्य ऐसे नाम हैं जिनकी जानकारी अभी हाल ही के कुछ वर्षों में प्राप्त हुआ है। इस सीमित पहचान के बावजूद, उनके जीवन की जानकारी अक्सर मौखिक कहानियाँ, स्थानीय परंपराओं और भक्ति साहित्य में बिखरी हुई है।

महिलाओं की आवाज़ों को किनारे करने का मतलब भागीदारी की कमी नहीं है। बल्कि, यह ऐतिहासिक दस्तावेजों में संरचनात्मक रूप से महिलाओं की अदृश्यता को दिखाता है। महिलाओं की भक्ति प्रथाएँ अक्सर घरेलू रस्मों, मंदिर सेवा और सामुदायिक समारोहों में शामिल होती थीं, ऐसी जगहें जिन्हें औपचारिक साहित्यिक इतिहास में शायद ही कभी दर्ज किया गया हो। इसलिए हेळवनकट्टे गिरियम्मा की कहानी विशेषतः महत्वपूर्ण हो जाती है। उनका जीवन धार्मिक परंपराओं में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों और उन तरीकों को दिखता है जिनसे आध्यात्मिक भक्ति अधिकार के दूसरे रूप बना सकती है।

हेळवनकट्टे गिरियम्मा की जीवनी

हेळवनकट्टे गिरियम्मा अठारहवीं सदी की कन्नड़ कवि-संत थीं जो हरिदास परंपरा से जुड़ी थीं। उनका जन्म कर्नाटक के आज के हावेरी ज़िले के रानेबेन्नूर में हुआ था और वे अरवथुकालू परिवार से थीं। उनके माता-पिता, भीष्टप्पा जोइस और तुंगम्मा, वैष्णव थे। किंवदंति के अनुसार, इस जोड़े ने भगवान वेंकटेश्वर से बच्चे के लिए बहुत प्रार्थना की थी और उन्हें गिरियम्मा का आशीर्वाद मिला।

उनका प्रारंभिक जीवन धार्मिक वातावरण में बीता, जहाँ भक्ति से भरी कहानियाँ सुनाई जाती थीं। बचपन से ही उन्होंने रामायण, महाभारत और पुराणों की कहानियाँ सुनीं, साथ ही हरिदास संतों की रचनाएँ भी सुनीं। उनके पिता, जो एक वैदिक विद्वान थे, इन्होंने संगीत और साहित्य में उनकी रुचि को बढ़ावा दिया।

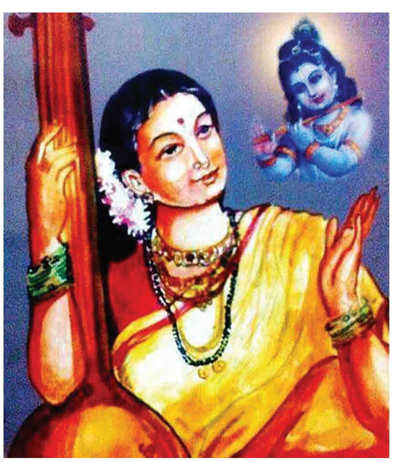

चार साल की उम्र में ही उनके जीवन में की सबसे दुखद घटना घटी जब उनके माता-पिता दोनों का देहांत हो गया। बाद में उन्हें उनके चाचा और चाची ने पाला। इन मुश्किलों के बावजूद, गिरियम्मा ने बहुत अधिक भक्ति दिखाई। उनके बचपन की एक यादगार घटना श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के त्योहार के दौरान भगवान कृष्ण की एक मूर्ति से जुड़ी थी। उन्होंने मूर्ति को माँ की तरह प्यार से गले लगा लिया और उसे अपने बच्चे की तरह मानने लगीं, जिससे भगवान के साथ उनका गहरा निजी भक्ति वाला रिश्ता बन गया।

उस समय की परंपरा के अनुसार, गिरियम्मा का विवाह, कम उम्र में ही, मल्लेबेन्नूर के कृष्णप्पा से हो गई थी। हालाँकि उनका आध्यात्मिक झुकाव इतना ज्यादा था कि उन्होंने सांसारिक जीवन में बहुत कम रुचि दिखाई। अंततः अपने पति और परिवार की सहमति से, उन्होंने भक्ति और तपस्या का मार्ग चुना, यहाँ तक कि अपने पति को दूसरी शादी के लिए भी मना लिया ताकि वह खुद को पूरी तरह से आध्यात्मिक कार्यों में लगा सकें।

बाद में गिरियम्मा हेलवनकट्टे के लक्ष्मी रंगनाथ मंदिर से जुड़ गईं, जहाँ उन्होंने अपना जीवन पूजा और रचना में बिताई। उनकी आध्यात्मिक यात्रा श्री गोपालदास जैसे प्रबुद्ध हरिदास संतों से प्रभावित हुई, जिन्होंने उनकी भक्ति और प्रतिभा को पहचानते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया।

आध्यात्मिक रूप से समर्पित होने के बावजूद, गिरियम्मा को समाज का काफी विरोध झेलना पड़ा। क्योंकि उनकी कोई संतान नहीं थी और पारंपरिक घरेलू कामों से वो अलग रहती थीं, इसलिए समाज के कुछ लोगों ने उनकी बुराई की या उन्हें अलग-थलग कर दिया। फिर भी वह अपनी भक्ति के प्रति निष्ठावान रहीं, और गुस्से का जवाब विनम्रता और दया से दिया। समय के साथ एक रहस्यवादी और कवयित्री के रूप में उनकी पहचान बढ़ती गई। भक्तों का मानना था कि वह चमत्कार करती थीं, जिसमें इलाज और भगवान के कार्य शामिल थे। चाहे इन्हें ऐतिहासिक घटनाओं के तौर पर समझा जाए या सांकेतिक कहानियों के तौर पर, ये कहानियाँ दिखती हैं कि समुदायों में उनके लिए कितना गहरा सम्मान था।

हरिदास साहित्य में साहित्यिक योगदान

जिस समाज एवं सामाजिक बंधनों के बीच में रहते हुए हेळवनकट्टे गिरियम्मा ने कन्नड भक्ति साहित्य को समृद्ध किया अतः उनका साहित्यिक योगदान एक विशेष स्थान रखता है। माना जाता है कि उन्होंने लगभग तीन हज़ार भक्ति गीत लिखे जिनमें अंकित नाम ''हेलावनाकट्टे रंगा'' का प्रयोग किया है। गिरियम्मा के

इष्टदेव श्रीरंगनाथ थे जिनके प्रति उन्होंने अपने आप को समर्पित कर दिया था।

उनकी रचनाओं में कीर्तन, कहानी वाली कविताएँ और भक्ति गीत शामिल है। उनकी खास रचनाओं में कृष्ण कोरावंजी, ब्रह्मा कोरावंजी, सीता कल्याण, चंद्रहासन कथे और पौराणिक विषयों पर आधारित अन्य कहानी वाली रचनाएँ हैं।

गिरियम्मा की रचनाएँ अपनी सहजता और भावनात्मक गहराई के लिए लोकप्रिय हैं। अन्य हरिदास संतों की भाँति, उन्होंने सरल भाषा का प्रयोग किया ताकि उनके गीत आम भक्तों को समझ में आ सकें। फिर भी उनकी रचनाओं में गहरी तात्विकता और काव्यात्मक कल्पना भी परिलक्षित है।

इसका एक उदाहरण उनकी वर्षा के आवाहन वाली लोकप्रिय प्रार्थना है, जो भक्ति का तीव्रता और सामाजिक चिंतन दोनों को प्रदर्शित करती है। कविता में, वह सूखे से परेशान औरतों के बारे में बताती हैं जो वर्षा के लिए हरि से प्रार्थना करते हुए सूखे कुओं से पानी निकाल रही हैं। यह गीत सामूहिक दुःख के पल को आध्यात्मिक याचना में परिवर्तित कर देता है।

रोज़मर्रा की ज़िंदगी और भगवान की भक्ति का यह मेल उनकी कविता की विशिष्टता है। उनके गीत अक्सर आम अनुभवों से निकलते हैं-रंगोली बनाना, खाना बनाना, भगवान की देखभाल करना, या प्रकृति को निहारना-फिर भी वे आध्यात्मिक ज्ञान की अभिव्यक्ति बन जाते हैं।

गिरियम्मा की कविता में भक्ति का स्वरूप

गिरियम्मा की रचनाओं में व्यक्त भक्ति-भाव, मातृ-भक्ति के एक विशिष्ट रूप को दर्शाता है। वे अक्सर स्वयं को भगवान कृष्ण अथवा रंगनाथ की माँ के रूप में कल्पित करती थीं, और उस दिव्य शिशु की देखभाल अत्यंत स्नेह तथा आत्मीयता के साथ करती थीं। यह दृष्टिकोण व्यापक भक्ति-परंपरा के साथ गहरा सामंजस्य रखता है, जहाँ भक्त ईश्वर के साथ सेवक, सखा अथवा माता-पिता जैसे संबंध स्थापित कर लेते हैं।

गिरियम्मा की मातृ-भक्ति विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह घरेलू बिंबों को आध्यात्मिक अनुभव के साथ एकाकार कर देती है। दैनिक जीवन से जुड़ी गतिविधियाँ-जैसे भोजन कराना, पालन-पोषण करना, अथवा लोरी सुनाना-ही यहाँ उपासना के कृत्य बन जाती हैं। इस रूपांतरण के माध्यम से गृहस्थ जीवन और ईश्वरीय सेवा के मध्य की सीमाएँ विलीन हो जाती हैं।

उनकी कविता करुणा और नैतिक जीवन-शैली पर भी बल देती है। उनकी अनेक रचनाएँ विनम्रता, क्षमाशीलता और भक्ति को आध्यात्मिक साक्षात्कार के मार्ग के रूप में प्रोत्साहित करती हैं। उनकी कविता का प्रत्येक छंद प्रायः मानवीय आचरण पर एक नैतिक चिंतन के रूप में कार्य करता है।

उनकी भक्ति का एक अन्य आयाम सांसारिक आसक्तियों से विरक्ति हैं। पारंपरिक वैवाहिक जीवन का परित्याग करने का उनका निर्णय, आध्यात्मिक अनुशासन के प्रति उनकी गहन निष्ठा को प्रदर्शित करता है। तथापि, उनकी कविता संसार का पूर्णतः तिरस्कार नहीं करती; अपितु, वह सांसारिक अनुभवों को ही भक्ति के अवसर के रूप में व्याख्यायित करती है।

हेळवनकट्टे गिरियम्मा का महत्व

हेळवनकट्टे गिरियम्मा के महत्व को कई दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है।

पहला, वह हरिदास परंपरा में दर्ज सबसे शुरुआती महिला ध्वनियों में से एक का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनकी उपस्थिति इस धारणा को चुनौती देती है कि भक्ति आंदोलनों पर विशेष रूप से पुरुष संतों का ही वर्चस्व था।

दूसरा, उनका जीवन यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक सत्ता संस्थागत ढांचों के बाहर भी कैसे उभर सकती है। बिना किसी औपचारिक शिक्षा या संरक्षण के, उन्होंने भक्ति साहित्य का एक विशाल भंडार तैयार किया, जिसे आज भी गाया और याद किया जाता है।

तीसरा, उनकी कविता साहित्य, संगीत और आध्यात्मिकता के बीच एक सेतु का काम करती है। अन्य हरिदास रचनाकारों की तरह, उनके गीत भी प्रस्तुति के लिए ही रचे गए थे, जिससे वे कर्नाटक की जीवंत संगीत विरासत का एक अभिन्न अंग बन गए।

चौथा, गिरियम्मा की जीवन गाथा लिंग, भक्ति और सामाजिक प्रतिरोध के मिलन बिंदु को दर्शाती है। आलोचना और उपेक्षा के बावजूद, वह अपने आध्यात्मिक मार्ग पर अडिग रहीं, और उन्होंने उस दृढ़ता को मूर्त रूप दिया जो अक्सर भक्ति संतों से जुड़ी होती है। अंत में, उनकी रचनाएँ रोज़मर्रा के जीवन और रहस्यमयी अनुभवों के एक अद्वितीय मेल को उजागर करती हैं। साधारण गतिविधियों को भक्ति की अभिव्यक्ति में रूपांतरित करके, उन्होंने हरिदास परंपरा के भीतर आध्यात्मिक साधना की संभावनाओं का विस्तार किया।

निष्कर्ष

कन्नड़ भक्ति साहित्य के इतिहास में हेळवनकट्टे गिरियम्मा का एक विशिष्ट स्थान है। कर्नाटक के जीवंत हरिदास आंदोलन से उभरकर, उन्होंने अपनी व्यक्तिगत भक्ति को काव्य-अभिव्यक्ति का रूप दिया, जिसकी गूंज आज भी इस क्षेत्र की आध्यात्मिक संस्कृति में सुनाई देती है। उनका जीवन धार्मिक परंपराओं में महिलाओं को मिलने वाले अवसरों और उनके सामने आने वाली सीमाओं दोनों को ही दर्शाता है। जहाँ एक ओर सामाजिक रूढ़ियों ने अक्सर महिलाओं की आवाज़ को होशिये पर धकेल दिया, वहीं गिरियम्मा की अटूट भक्ति ने उन्हें इन बाधाओं को पार करने और हरिदास साहित्यिक विरासत में सार्थक योगदान देने में सक्षम बनाया।

आज, भक्ति इतिहास की अधिक समावेशी समझ के लिए गिरियम्मा जैसी विभूतियों पर विद्वानों का पुनः ध्यान केंद्रित करना अत्यंत आवश्यक है। महिला संतों की रचनाओं को पुनः खोजकर और उनका अध्ययन करके, इतिहासकार उन विविध स्वरों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, जिन्होंने भारत की भक्ति परंपराओं को आकार दिया है।

इस प्रकार, हेळवनकट्टे गिरियम्मा केवल एक कवयित्री या रहस्यवादी के रूप में ही नहीं, बल्कि भक्ति की उस शाश्वत शक्ति के प्रतीक के रूप में खड़ी हैं, जो सामाजिक सीमाओं को चुनौती देने और आध्यात्मिक रचनात्मकता को प्रेरित करने की क्षमता रखती है।

(गतांक से)

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

मयक्कु मिरुविनै वल्लियि प्पूॅण्डू, मति मयंगि
त्तुयक्कुम् पिरवियिल् तोंड्रियएन्नै, तुयरगट्रि
उयक्कोण्डु नल्हु मिरामानुज वेन्न दुन्नैयुन्नि
नयक्कुमव र्क्किदिळु क्केन्बर्, नल्लव रेन्नुम्नैन्दै ॥१०१॥

"अविवेकहेतु भूतप्रबलपापात्मक निगलबन्धप्रापणेन व्यामोहयति संसारमण्डले संसरन्तं मां पवित्रीकुर्वन् रामानुज!" इत्यभिधानमुखेन भवदीयपावनत्वगुणे यदहं प्रावण्यं प्रकाशयामि तदिदं महत्तरमवद्यमित्याचक्षते ते महान्तो ये खलु सततं भवदीयभोग्यतानुसन्धाने प्रवणाः। (इदमवधेयम्-भगवति रामानुजे पावनत्वं भोग्यत्वमिति धर्मद्वितयं विराजते। भक्तानामखिलपातकनिर्ह रणेन पवित्रीकरणं पावनत्वमित्युच्यते। सदाऽनुभाव्यत्वमेव भोग्यतेत्युच्यते। एतस्मिन्नुभयस्मिन् पावनत्वानुसन्धानापेक्षया भोग्यत्वानुसन्धानमेव साधीयः कुत इति चेत्; अस्मदीयानि पापान्यपाहरदिति हेतुना हि पावनत्वानुसन्धानं भवति। ततश्चैतत् सोपाधिकं भवति। भोग्य त्वानुसन्धानं हि नैवविधम्, उपाधेरभावात्। स्वरूपप्रयुक्तं हि तत्। तथा च सोपाधिकपावनत्वानुसन्धानापेक्षया निरुपाधिक-भोग्यत्वानुसन्धानमुत्तममिति सिद्धम्। भगवान् रामानुजो मदीयान्यघान्य-शेषतोऽपहृतवानिति प्रबन्धेऽस्मिन् असकृदनुसन्धानदर्शनेन कविवरस्यास्य हृदयं गुरोः पावनत्वगुणेऽतिमात्रं प्रवणमित्यवगम्यते। हन्त भोग्यतानुसन्धानं विहाय पावनत्वानुसन्धानमसकृत्कृतवानस्मीति तत्रानुतापः प्रकाशितो भवति गाथायामस्याम्।।

अब मैं आपकी यह स्तुति कर रहा हूँ कि "अज्ञानप्रद पुण्यपाप नामक दो प्रकार के कर्म रूपी बेडी में फंसाकर, (उससे) विवेक को नाशकर भ्रम पैदा करनेवाले संसार में जन्म लेनेवाले मेरे दुःख दूरकर, कृपया मेरा उद्धार करनेवाले हो श्री रामानुज स्वामिन्।" परंतु सत्पुरुष कहते हैं कि यों स्तुति करना, प्रेमपूर्वक आपका ही नित्यध्यान करनेवाले द्रुतहृदयों के लिए अनुचित है।

(विवरण - श्री रामानुज स्वामीजी के पावनत्व व भोग्यत्व नामक दो धर्म होते हैं। पावनत्व माने भक्तों के पाप मिटाकर उनको पवित्र बनाना और भोग्यत्व माने नित्य अनुभव करने योग्य मधुर रहना। रसिक लोगों का यह मंतव्य है कि इन दोनों में पावनत्व की अपेक्षा भोग्यत्व का अनुसंधान करना ही श्रेष्ठ है। क्योंकि पावनत्व का अनुसंधान करने वाला कुछ स्वार्थ का ख्याल करता है, अर्थात् अपने पाप मिटाने की इच्छा करता है; भोग्यत्व के अनुसंधान में यह स्वार्थभावना नहीं रहती। अतः हाल में अमुदनार कह रहे हैं कि मैंने श्रीस्वामीजी के पावनत्व का ही जो बहुत अनुसंधान किया यह कुछ अनुचित-सा लगेगा। इसका यह तात्पर्य नहीं कि पावनत्व का अनुसंधान सर्वथा अनुचित है। क्योंकि श्रीस्वामीजी के सभी गुणों का चिंतन करना ही आवश्यक है। और गुरूजी ने जो हमारे पापों को समूल मिटा दिया, उसका अनुसंधान नहीं करने पर हम कृतघ्न भी बनेंगे। अतः एक दृष्टि से यह काम करना पडता है और दूसरी दृष्टि से इस पर जोर डालना कुछ अनुचित सा प्रतीत होता है।)

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

ऋषिकेश, नारायणवनम् श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

(दि. 27-05-2026 से दि. 05-06-2026 तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
27-05-2026	बुध	---	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
28-05-2026	गुरु	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
29-05-2026	शुक्र	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
30-05-2026	शनि	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
31-05-2026	रवि	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
01-06-2026	सोम	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुड़वाहन
02-06-2026	मंगल	हनुमन्तवाहन, सा. वसंतोत्सव	गजवाहन
03-06-2026	बुध	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
04-06-2026	गुरु	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
05-06-2026	शुक्र	चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

सूरजमुखी के बीज

- डॉ.सुमा एन.एस.जोशी

सूरजमुखी सूर्य के मार्ग के अनुसार दिन भर अपने फूल को सूर्य की ओर मोड़ता रहता है। इसका फूल सुबह के समय खुलता है और शाम को बंद हो जाता है। सूरजमुखी के बीज (Sunflower Seeds), जिन्हें वैज्ञानिक रूप से Helianthus annuus Linn. कहा जाता है, Asteraceae (Compositae) कुल से संबंधित एक महत्वपूर्ण तिलहन एवं पौष्टिक आहार स्त्रोत हैं। सूर्य की दिशा में घूमने वाले अपने विशिष्ट पुष्प के कारण यह पौधा ''सूरजमुखी'' के नाम से प्रसिद्ध है। आयुर्वेदिक दृष्टि से यद्यपि सूरजमुखी का प्रत्यक्ष उल्लेख प्राचीन संहिताओं में सीमित है, फिर भी इसके बीज एवं तेल का उपयोग आधुनिक आयुर्वेदिक आहार-विज्ञान एवं चिकित्सा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार सूरजमुखी का संबंध सूर्य उपासना से जोड़ा जाता है। यूनानी (ग्रीक) मिथक में क्लाइटि (Clytie) नामक अप्सरा की कथा प्रसिद्ध है, जो सूर्यदेव हेलिओस के प्रेम में निरंतर उनकी ओर देखती रही और अंततः सूरजमुखी के पुष्प में परिवर्तित हो गई। इसी कारण सूरजमुखी को सूर्य के प्रति समर्पण एवं ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। ऐतिहासिक रूप से इसका उपयोग प्राचीन अमेरिकी सभ्यताओं-विशेषकर इंका एवं रेड इंडियन जानजातियों-द्वारा तेल, आहार एवं औषधीय प्रयोजनों के लिए किया जाता था।

सूरजमुखी के पौधे लगभग 2-5 फुट तक ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते और फूल भिन्न-भिन्न रंगों के हो सकते हैं- जैसे सफ़ेद, बैंगनी और पीले। फूल के बीच में केसर जैसा भाग होता है जहाँ बीज होते हैं। सूरजमुखी का मूल स्थान उत्तरी अमेरिका माना जाता है। वहाँ से यह यूरोप, एशिया एवं अन्य महाद्वीपों में फैल गया। वर्तमान में सूरजमुखी की खेती विश्व के अनेक देशों- जैसे रूस, यूक्रेन, चीन, अर्जेंटीना एवं भारत में व्यापक रूप से की जाती है। भारत में यह मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना एवं तमिलनाडु में उगाया जाता है। इसके बीजों से प्राप्त तेल एवं पोषक तत्वों के कारण सूरजमुखी एक आर्थिक एवं पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण फसल बन चुका है।

सूरजमुखी को संस्कृत में सूर्यकमल, आदित्यपुष्प एवं भानुपुष्प जाता है, हिंदी में इसे सूरजमुखी तथा सूर्यमुखी के नाम से जाना जाता है, जबकि अंग्रेज़ी में इसे Sunflower कहा जाता है।

सूरजमुखी के बीजों में प्रमुख रूप से असंतृप्त वसीय अम्ल-विशेषकर लिनोलिक अम्ल एवं ओलिक अम्ल - पाए जाते हैं। इनमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, आहार रेशा(डायटरी फाइबर), विटामिन-E (टोकोफेरॉल), विटामिन-B समूह तथा खनिज तत्व जैसे मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, पोटैशियम, आयरन, जिंक एवं सेलेनियम उपस्थित होते हैं। इसके अतिरिक्त फाइटोस्टेरॉल, फिनोलिक यौगिक एवं एंटीऑक्सीडेंट्स

भी पाए जाते हैं, जो इसके पोषण एवं स्वास्थ्य लाभ में योगदान करते हैं।

सूरजमुखी का सम्पूर्ण पौधा वात और कफ को शांत करने वाला माना जाता है। इसके पौधे से अल्कोहलिक अर्क में कैंसर-विरोधी गुण भी पाए गए हैं। यह आसानी से पचता है, दर्द को कम करता है, कीड़ों को मारता है और त्वचा रोग तथा वात विकारों में लाभ देता है। बाह्य रूप से लगाने पर यह सरसों की तरह तिक्तता और गर्माहट देकर दर्द और सूजन में राहत देता है।

सूरजमुखी का उपयोग कैसे करें

1. सूरजमुखी के बीज

a. भोजन से 30-60 मिनट पहले कच्चे, भुने हुए या सूखे सूरजमुखी के बीज $^{1}/_{2}$-1 चम्मच मात्रा में लें।

b. सूरजमुखी के बीजों को सलाद में मिलाकर भी सेवन किया जा सकता है।

2. सूरजमुखी का तेल

इसका उपयोग सामान्य रूप से खाना पकाने में किया जा सकता है, जैसे तलने, बेकिंग आदि के लिए।

3. सूरजमुखी पाउडर

a. सूरजमुखी पाउडर $^{1}/_{4}$-$^{1}/_{2}$ चम्मच मात्रा में दिन में दो बार लिया जा सकता है।

b. इसे भोजन के ऊपर छिड़ककर या नाश्ते के रूप में भी लिया जा सकता है।

4. सूरजमुखी कैप्सूल

a. 1-2 सूरजमुखी कैप्सूल लें।

b. दोपहर और रात के भोजन के बाद पानी के साथ निगलें।

औषधीय उपयोग

1. माइग्रेन : बीज को पत्ती के रस में पीसकर माथे पर 2-3 दिन पेस्ट् लगाए।

2. कान के दर्द : पत्ती का रस कान में डालने से दर्द में राहत।

3. गोल्ट (गाँठ/गोइटर) : जड़ को लहसुन के साथ पीसकर गर्दन पर बांधने से गोइटर में लाभ।

4. पेट दर्द/गैस : फूल के रस की बूंदें दूध में मिलाकर देने से पेट दर्द में राहत।

5. पाखाना साफ़ करना : नाभि पर बीज का तेल डालने से मल साफ़ होता है।

6. बवासीर : बीज का चूर्ण व चीनी मिलाकर सुबह-शाम देने से बवासीर में सहायता।

7. कीड़े/कृमि : बीज खाने से पेट के कीड़ों को मारने में मदद।

8. सूजन/फोड़े : पत्तों को बाँधने से सूजन या फोड़े कम होते हैं।

9. बुखार : जड़ का काढ़ा दिन में दो बार देने से बुखार में राहत।

10. कोलेस्टॉल नियंत्रण : बीज को पीसकर खाने से रक्त में कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करने में सहायता।

11. गोनोरिया : पत्तियों का पेस्ट् प्रभावित हिस्से पर लगाने से लाभ।

12. पोषक तत्वों से भरपूर।

13. सूरजमुखी के बीज आवश्यक पोषक तत्त्वों का समृद्ध स्रोत हैं, जिनमें शामिल हैं -

14. विटामिन ई : एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, जो कोशिकाओं को क्षति से बचाता है।

15. मैग्नीशियम : मांसपेशियों एवं तंत्रिका तंत्र के कार्य को सहारा देता है।

16. सेलेनियम : रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं थायरॉइड स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है।

17. स्वस्थ वसा : इनमें पॉलीअनसैचुरेटेड एवं मोनोअनसैचुरेटेड फैट्स होते हैं, जो हृदय के लिए लाभकारी हैं।

- हृदय स्वास्थ्य में सहायक : सूरजमुखी के बीज एवं तेल खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करने और अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) को बढ़ाने में सहायक होते हैं। इनमें उपस्थित लिनोलिक अम्ल (ओमेगा-6 वसीय अम्ल) रक्तचाप को संतुलित रखने तथा हृदय रोग के जोखिम को कम करने में मदद करता है।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है : जिंक एवं सेलेनियम से भरपूर होने के कारण सूरजमुखी के बीज प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करते हैं, जिससे शरीर संक्रमण एवं सूजन से लड़ने में सक्षम होता है।
- त्वचा एवं बालों के लिए लाभकारी : सूरजमुखी के तेल विटामिन E से समृद्ध होता है, जो त्वचा को नमी प्रदान करता है, मुहांसों को कम करता है तथा समय से पहले बुढ़ापा आने की प्रक्रिया को धीमा करता है। बालों में सूरजमुखी का तेल लगाने से रूखापन कम होता है और चमक बढ़ती है।
- पाचन में सहायक : सूरजमुखी के बीजों में आहार रेशा (डायटरी फाइबर) अधिक मात्रा में होता है, जो कब्ज को रोकने तथा पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में सहायक होता है।
- वजन नियंत्रण में सहायक : इनमें उपस्थित फाइबर एवं प्रोटीन लंबे समय तक पेट भरा होने का एहसास कराते हैं, जिससे अनावश्यक भूख कम होती है और वजन नियंत्रण में मदद मिलती है।
- सूजन को कम करता है : सूरजमुखी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट एवं स्वस्थ वसा शरीर में सूजन को कम करने में सहायक होते हैं, जिससे गठिया जैसी स्थितियों में लाभ मिलता है।
- मस्तिष्क कार्य को समर्थन : सूरजमुखी के बीजों में कोलीन नामक पोषक तत्व पाया जाता है, जो स्मरण शक्ति एवं संज्ञानात्मक कार्यों (कॉग्निटिव फंक्शन) को बेहतर बनाने में सहायक होता है।

सूरजमुखी के बीजों का अत्यधिक सेवन करने से कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इनमें अधिक कैलोरी एवं वसा होने के कारण वजन बढ़ने की संभावना रहती है। अधिक मात्रा में सेवन से पाचन तंत्र पर भार पड़ सकता है, जिससे गैस, अपच, पेट फूलना या दस्त की समस्या हो सकती है। उष्ण एवं स्निग्ध गुणों के कारण पित्त प्रकृति वाले व्यक्तियों में अम्लता, मुँह में छाले या त्वचा पर फुंसियाँ हो सकती हैं। अधिक नमक वाले भुने बीजों का सेवन रक्तचाप बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त, अत्यधिक मात्रा में सेलेनियम के सेवन से मतली, सिरदर्द या बाल झड़ने जैसी समस्याएँ भी हो सकती हैं, इसलिए सूरजमुखी के बीजों का सेवन सदैव सीमित मात्रा में ही करना चाहिए। यहाँ दी गई जानकारी केवल सामान्य जानकारी के लिए है। किसी भी संदेह या समस्या के लिए कृपया चिकित्सक से परामर्श करें। सुरक्षित रहें और स्वस्थ रहें।

मई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

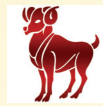

मेष राशि - स्वास्थ्य ठीक रहेगा, परन्तु मानसिक तनाव होने के कारण क्रोध बढ़ेगा, अपनों का सहयोग, बन्धु-बान्धवसुख। धन कि प्राप्ति होगी लेकिन व्यर्थ खर्च होंगे, अपव्यय, मित्रों का सहयोग, सोच समझकर किसी योजना को करें वरना नुकसान भुगतना पड़ेगा। भाग्य प्रबल, कार्यक्षेत्र में अस्थिरता जिससे मन खिन्न रहेगा, सन्तानचिन्ता बनी रहेगी।

वृषभ राशि - सरदर्द, ज्वर प्रकोप सामान्य रहेगा, धन-धान्य प्राप्ति, सम्पत्तिलाभ, पूर्वकृत योजनाओं में सफलता। मित्रों का सहयोग, पत्नीसुख, दाम्पत्य जीवन सौहार्द पूर्ण, सन्तान एवं पारिवारिक सुख, गृहस्थ जीवन में परेशानी, भाग्यफल उत्तम, रोजी-रोजगार, कारोबार में अनेक सफलता, शुभ-मांगलिक कार्यों में धनव्यय।

मिथुन राशि - मौसम परिवर्तन होने के कारण शारीरिक मानसिक तनाव एवं कष्ट, अपने धैर्य-मनोबल को बना कर रखे सफलता मिलेगी। मातृ-पितृसुख मध्यम, संतति सुख उत्तम, दाम्पत्य सुख, नौकरी पेशे वाले लोगों के लिए अपने उच्च अधिकारी से मेल मिलाप रखने से पदोन्नति।

कर्कटक राशि - यह माह आपके लिए उत्तम सिद्ध होगा, उत्तम स्वास्थ्य, उत्साह मनोबल में वृद्धि, भाग्ययोग प्रबल। मातृ-पितृसुख, संतानपक्ष से शुभ समाचार, घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पादन होंगे, पूर्वकृत योजना सफल, स्त्री/पति सुख, सामाजिक-धार्मिक कार्यों में अभिरुची। यत्र तत्र भ्रमण योग, धनलाभ, भूमि-जायदाद प्राप्ति योग।

सिंह राशि - शारीरिक रोग, उदर-वातविकार से परेशानी, शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा, धन-सम्पत्तिलाभ, पारिवारिक-सुख। सन्तानसुख, अपनों का सहयोग पूर्ण, मित्रजनों से मेलमिलाप रखने से कार्यक्षेत्रों में प्रगति, नई योजनाओं का शुभारम्भ। दाम्पत्य सुख, छात्रों के लिए उत्तम समय, स्त्रीकष्ट, नौकरी क्षेत्रों में उन्नति।

कन्या राशि - स्वास्थ्य उत्तम, शत्रु कमजोर, स्त्री-पत्नी के बीच मनमुटाव होने से मानसिक कष्ट। भाग्य भरोसे अपने कार्यों को न छोड़े पश्चताना पड़ेगा, भाग्य प्रबल है, धन-परिवार सुख, कुटुम्बजनों कि चिन्ता, सन्तानसुख। भूमि जायदाद खरिद बेच से लाभ। मातृ व संतानसुख की चिन्ता, योजनाएँ असफल, गृहस्थ जीवन में कुछ खट्टापन रहेगा।

तुला राशि - यह मास आपके लिए मध्यमफलदायक रहेगा, सुन्दर काय, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पूर्वकृत योजना असफल, परिवार व बन्धुजनों का सहयोग, मातृकष्ट, गुप्त रोग सम्भव, संघर्ष जीवन बना रहेगा, संततिपक्ष शुभ, अपने करियर के ऊपर ध्यान रखे सफलता मिलेगी।

वृश्चिक राशि - शारीरिक सुख, उत्तम कार्य, नौकरी-धन्धे वाले अपने कार्यों में समझदारी से काम ले जिससे पदोन्नति होगी। मान-सम्मान में बढोतरी, संतति चिन्ता। योजनाओं में बाधा, मातृकष्ट, शत्रुपक्ष कमजोर, गृहस्थ जीवन में कुछ परेशानी हो सकती है। पत्नी से मनमुटाव, अपनों का असहयोग, मित्रों के द्वार क्लेश।

धनुष राशि - स्वस्थ शरीर, उत्तम विचारों का मन में उदय, काव्यादि साहित्य कार्यों में रुचि, बन्धुजनों का भरपूर सहयोग। धनागम, भाग्य बाधा, कार्यों में रुकावट, पत्नी कष्ट, शत्रु व्यवधान बना रहेगा परन्तु शत्रुपक्ष कमजोर है चिन्ता न करें। गृहस्थ जीवन सुखमय, सन्तान सुख, मांगलिक कार्यों में संलग्नता, कार्यक्षेत्रों में उत्तरोत्तर वृद्धि।

मकर राशि - शरीर स्वस्थ रहेगा, मातृ-पितृ सुख, कार्यक्षेत्रों में कुछ बाधा, धनागम में परेशानी। अपनों का भय जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा, बन्धुजनों से असहयोग, सन्तान सुख। कुछ लोगों से मनमुटाव, रोगभय, मित्रपक्ष से सहयोग, भाग्य प्रबल है। कार्यक्षेत्रों में सोच-विचार कर धन खर्च करे वरना पश्चताना पडेगा।

कुंभ राशि - शारीरिक बाधा, नेत्र-उदर-वातविकार, अपनों का सहयोग, मित्र-बन्धुजनों का सहयोग, आमदनी से अधिक खर्च। सन्तानसुख, दाम्पत्य सुख, योजनाओं से लाभ, मातृसुख प्राप्त होंगे, पारिवारिक चिन्ता। कार्यक्षेत्रों में उत्तरोत्तर वृद्धि, धर्मकार्य संपादन, सामाजिक कार्यों में संलग्नता, पदोन्नति।

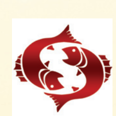

मीन राशि - शारीरिक कष्ट से मानसिक तनाव, धनलाभ, कुटुम्बजनों का सहयोग, पारिवारिक सहयोग से उत्तरदायित्व का निर्वहन। संततिसुख, शत्रुपक्ष कमजोर रहेगा, भाग्योन्नति, कारोबारी क्षेत्रों में प्रगति। योजना सफल, अचानक धनलाभ, पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति। दाम्पत्य जीवन सुखमय। छात्रों के लिए उत्तम समय। इष्टमित्रों का सहयोग, धार्मिक कार्यों में संलग्नता।

(नीतिकथा)

विचार ही जीवन हैं

- श्री के.रामनाथन

कल्याणपुर हरी-भरी फसलें, ठंडी मंद हवा और पक्षियों के मधुर कलरव से भरपूर, प्रकृति की गोद में बसा एक बेहद खूबसूरत गाँव था। उस गाँव की सीमा पर एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे, गाँव के एक बुजुर्ग बड़े ही शांत भाव से बैठा करते थे। अपने अनुभव और सौम्य स्वभाव के कारण वे बहुत प्रसिद्ध थे और दूर-दूर से लोग उनसे सलाह लेने आया करते थे।

एक सुबह, धूल उड़ाते हुए एक सफेद घोड़े पर सवार होकर एक प्रभावशाली युवक वहाँ पहुँचा। उसकी महँगी पोशाक और कीमती आभूषणों से साफ पता चलता था कि वह बहुत बड़ा धनवान है। वह सीधा बुजुर्ग के पास गया और बड़े गर्व के साथ पूछा, ''सुनिए महाशय! मैं किसी नए गाँव में बसने की सोच रहा हूँ। यह कल्याणपुर गाँव कैसा है? यहाँ के लोग कैसे हैं? क्या यहाँ मुझे वैसी सुख-सुविधाएँ मिलेंगी जैसा मैं चाहता हूँ?''

बुजुर्ग ने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और उसे देखा। फिर बड़े चैन से पूछा, ''बेटा, तुम इससे पहले किस गाँव में रहते थे? वहाँ के लोग तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करते थे?''

यह सुनते ही युवक का चेहरा सिकुड गया। वह नफरत से बोलो, ''ओह! मैं मैनापुर में रहता था। वह एक घटिया जगह है! वहाँ के लोग हमेशा लड़ते-झगड़ते रहते हैं और एक-दूसरे से जलते हैं। वहाँ मुझे एक पल की भी शांति नहीं मिली, इसीलिए मैं उसे छोड़कर यहाँ आया हूँ। अगर यह गाँव शांत है, तो मैं यहाँ एक आलीशान महल बनाकर रहना चाहता हूँ।''

बुजुर्ग ने एक ठंडी आह भरी और कहा, ''तब तो बेटा, यह गाँव तुम्हारे काम का नहीं है। यहाँ के लोग मैनापुर के लोगों से भी ज्यादा बुरे हैं। वे ईर्ष्यालु, धोखेबाज और षडयंत्रकारी हैं। तुम्हें यहाँ शांति कभी नहीं मिलेगी। बेहतर होगा कि तुम कोई दूसरा गाँव ढूँढ लो।''

निराश होकर उस युवक ने कहा, ''अच्छा! आपने साफ बता दिया और मैं बच गया!'' उसके बाद वह अपने घोड़े पर सवार होकर तेज़ी से वहाँ से चला गया।

उसी दिन शाम को, जब सूरज ढल रहा था, एक गरीब व्यापारी थक हारकर उसी बरगद

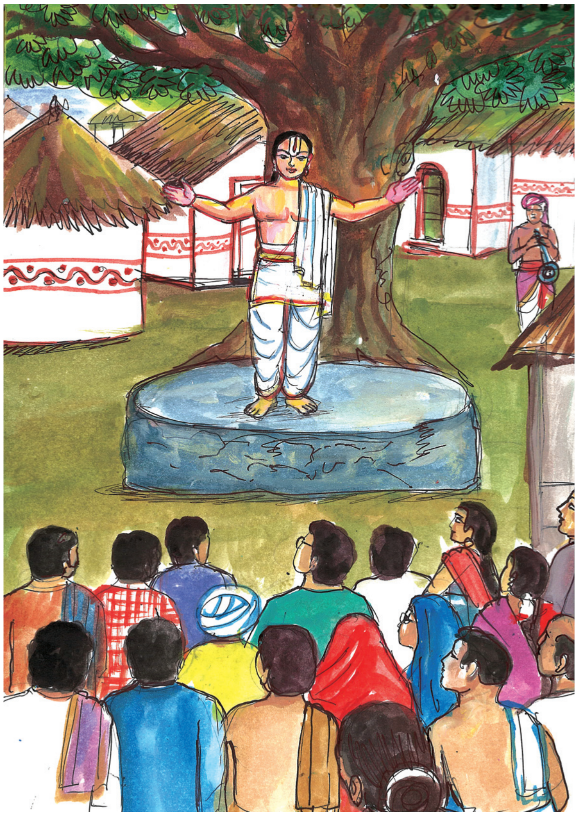

के पेड़ के नीचे पहुँचा। पसीने से तर-तर उस व्यक्ति ने अपने कंधे से भारी गठ्ठर नीचे रखा और बुजुर्ग को प्रणाम करते हुए बड़ी विनम्रता से कहा, ''प्रणाम बाबा! मेरा नाम सोमेश है। मैं आजीविका की तलाश में इस गाँव आया हूँ। मैंने इस गाँव के बारे में बहुत सुना है। यहाँ के लोग कैसे हैं? क्या मैं यहाँ रहकर अपना छोटा सा व्यापार शुरू कर सकता हूँ?''

बुजुर्ग ने उससे भी वही सवाल किया, ''बेटा, पिछला गाँव जहाँ तुम रहते थे, वह कैसा था?''

व्यापारी की आँखों में एक चमक आ गई। वह भावुक होकर बोला, ''बाबा, मैं सीतापुर में रहता था। वहाँ के लोग बहुत ही दयालु और प्यारे हैं। भले ही मैं वहाँ गरीबी में था, लेकिन उन लोगों ने मेरी बहुत मदद की। मेरा दिल तो वहीं लगा था, लेकिन अपने परिवार की गरीबी दूर करने के लिए भारी मन से मुझे वह गाँव छोड़ना पड़ा।''

बुजुर्ग मुस्कुराए और बोले, ''चिंता मत करो बेटा! यह कल्याणपुर गाँव तुम्हारे लिए स्वर्ग के समान है। यहाँ के लोग बहुत ही दयालु और मददगार हैं। तुम खुशी-खुशी यहाँ अपना व्यापार शुरू कर सकते हो। तुम यहाँ बहुत तरक्की करोगे।''

व्यापारी खुशी-खुशी बुजुर्ग के पैर छूकर गाँव के अंदर चला गया।

यह सब पास ही खड़ा एक किसान बड़े ध्यान से देख रहा था। वह उलझन में बुजुर्ग के पास आया और सवाल किया, ''बाबा, मुझे माफ़ करें, लेकिन मेरी एक बात समझ नहीं आई। सुबह जब वह अमीर आदमी आया, तो आपने गाँव वालों को बुरा-भला कहा। लेकिन शाम को जब यह गरीब व्यापारी आया, तो आपने कहा कि यहाँ के लोग बहुत अच्छे हैं। भला एक ही गाँव के लोग दो अलग तरह के कैसे हो सकते हैं?''

बुजुर्ग मुस्कुराते हुए बोला, ''बेटा, यह दुनिया एक आईना की तरह है। हम इसमें जो देखना चाहते हैं, हमें वही दिखाई देता है। सुबह जो युवक आया था, उसके मन में नफरत और अहंकार भरा था। वह जहाँ भी जाएगा, उसे बुराई ही दिखेगी। लेकिन यह व्यापारी अपने दिल में प्यार और कृतज्ञता लेकर आया है, इसलिए उसे हर जगह अच्छे लोग ही मिलेंगे।''

''जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसा ही हमारा जीवन बन जाता है!'' बुजुर्ग की यह बात सुनकर वह किसान पूरी तरह संतुष्ट हो गया।

मार्च-2026 महीने का क्विज-44 के समाधान

1) भगवान शिव,

2) उपादि पच्चडी/चट्नी, 3) पंचांग श्रवण,

4) मत्स्य अवतार,

5) श्री वेदनारायण स्वामी,

6) श्रीरंगनायकी,

7) थिम्मन्ना भट्ट और गोपिकांबा,

8) हनुमान, 9) रावणासुर,

10) हनुमान, 11) दशरथ,

12) जीव समाधि, 13) घनिष्ठ मित्र संबंध,

14) मूलविराट मूर्ति को, 15) श्रीराम.

चित्रकथा

श्लोक का महत्व

तेलुगु मूल - ‘कलारत्न’ डॉ.के.रविचंद्रन
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री तुंबलि शिवाजी

चिकित्सक ने राजा का इलाज करने के पहले राज भवन के चारों ओर दीवारों पर लगाया गया श्लोक को पढा।
विष के प्रभाव से राजा का शरीर काला हो जाएगा। यह बात सब को मालुम होगी। तब मरा जीना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए इस विषपूर्ण चाकू को बाजू में रख कर ईमानदारी से इलाज करूँगा।
अरे! चिकित्सक तुम क्यों चाकू को बदला है?
राजा! कुछ भी नहीं है।
चिकित्सक क्यों इतना घबरा रहा है? इस के बारे में पता करना पडेगा।
राजा ने राजवैद्य की पेटी से चाकू को निकालकर उसे दूध में डाल कर देखा। थोडी देर में दूध काला बन गया।
वैद्य बोलो! क्यों किया यह काम?
महाराजा मुझे माफ कीजिए पैसों की लालच में मैंने यह काम किया। मुझे कैद मत करो। मैं आप को कभी नहीं दिखूँगा।
मंत्री का षडयंत्र मालूम हुआ।
सैनिक लालच में गिरकर मुझे खतम करने की इस मंत्री की सोच नहीं, नहीं, इस द्रोही को बंदी बनाओ।
2
अविचार्य न कर्तव्यम् कर्तव्यम् सुविचारितम्।
साहित्य की शक्ति अद्वितीय है। आज जो महाकवि का श्लोक ही मेरे प्राणों की रक्षा किया। धन्योस्मि महाकवि!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजिनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-46

1) तिरुपति रेल्वे स्टेशन के निकट उपस्थित भगवानजी का नाम क्या है?
ज)..
2) वेंकटेश्वर भगवानजी का बडा भाई का नाम क्या है?
ज)..
3) हनुमान जी का माताजी का नाम क्या है?
ज)..
4) क्षीर सागर मंथन के लिए कछुआ के रूप धारण किया भगवान कौन है?
ज)..
5) आलाहल विष को किसने स्वीकार कर लिया?
ज)..
6) विवाह अनंतर पद्मावती-श्रीनिवास ने किस ऋषि के आश्रम में वास किया?
ज)..
7) पद्मावती का माता-पिता का नाम क्या है?
ज)..
8) तिरुक्कूडल मंदिर के माताजी (तायार) का नाम क्या है?
ज)..
9) तिरुमालिरुश्चोलै मंदिर के तीर्थ का नाम क्या है?
ज)..
10) तिरुमालिरुश्चोलै मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
11) सूरजमुखी का वैज्ञानिक नाम क्या है?
ज)..
12) क्षीर सागर मंथन के समय रस्सी के रूप में कौन काम किया?
ज)..
13) आं.प्र. में श्रीकूर्मम मंदिर कौन सा जिला में विराजित है?
ज)..
14) रामचरितमानस का लेखक कौन है?
ज)..
15) शबरी ने किसको फल खाने के लिए दिया था?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

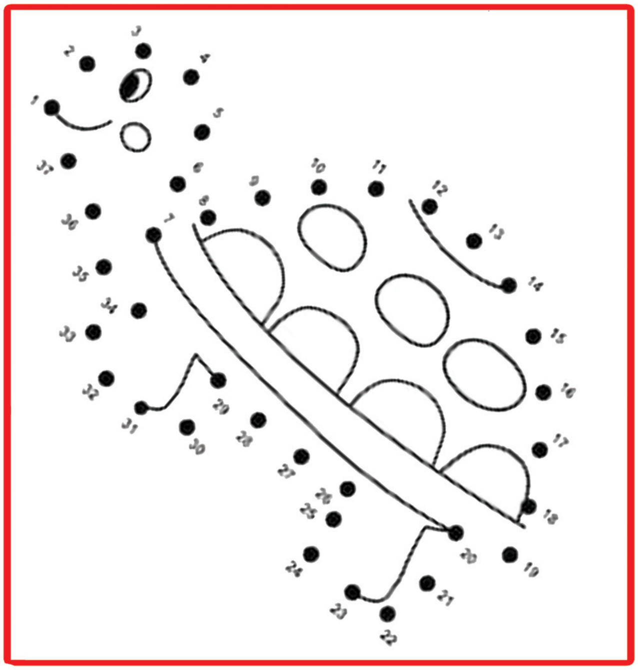

रंगों को भरिये क्या!

सही उत्तर को पहचान लीजिए और तत्संबंधित उत्तर को नीचे के डिब्बे में दिया है।

1. कूर्मावतार में भगवान विष्णु ने किस रूप का धारण किया?

a) मछली
b) सिंह
c) कछुआ
d) घोड़ा

2. निम्न सूचित किस विषय के लिए भगवानजी ने कूर्मावतार धारण किया?

a) रामायण युद्ध
b) क्षीर सागर मंथन
c) कुरुक्षेत्र युद्ध
d) दक्ष यज्ञ

3. क्षीर सागर मंथन के समय, पर्वत को कूर्मम ने किस अंग पर धारण किया?

a) सर पर
b) पीठ पर
c) हाथों में
d) पूँछ पर

4. क्षीर सागर मंथन का मुख्य उद्धेश्य क्या है?

a) स्वर्ण के लिए
b) पर्वतों की संपदा के लिए
c) अमरत्व को प्राप्त करने के लिए
d) भवनों का निर्माण के लिए

5. क्षीर सागर मंथन के लिए किस पर्वत को उपयोगित किया?

a) कैलाश पर्वत
b) मेरु पर्वत
c) मंदर पर्वत
d) विंध्या पर्वत

6. दशावतारों में कौन-सा स्थान में कूर्मावतार को सूचित करता है?

a) प्रथम
b) द्वितीय
c) तृतीय
d) चौथा

उत्तर :
1 : c) कछुआ
2 : b) क्षीर सागर मंथन
3 : b) पीठ पर
4 : c) अमरत्व को प्राप्त करने के लिए
5 : c) मंदर पर्वत
6 : b) द्वितीय

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

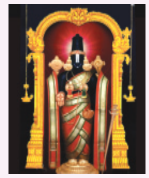

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....
2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC

दि. 21-03-2026 को तिरुमल श्री बालाजी भगवान जी को आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन.चंद्रबाबु नायुडू जी ने धर्मपत्नी सहित, पुत्र व मंत्री (आई.टी. व विद्या शाखा) श्री एन.लोकेश जी ने अपना बेटा का जन्म दिवस के संदर्भ में दर्शन किया। वेदपंडितों ने सी.एम. जी को शेषवस्त्र समर्पित कर वेदाशीर्वचन किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. का ई.ओ., ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. ने तीर्थ-प्रसाद व चित्रपठ को मुख्यमंत्रीजी को सौंपा दिया। इस संदर्भ में अन्नप्रसाद केंद्र में अन्न को वितरण किया। 44 लाख रूपयों को अन्नप्रसाद केंद्र को दान किया। इसी संदर्भ में तिरुमल में अत्याधुनिक 'फुड अनालसिस ल्याब' को आं.प्र. के माननीय मुख्यमंत्रीजी ने शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. का ई.ओ., ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. आदि अन्य उच्च अधिकारीगण और ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अन्य सदस्य गण ने भाग लिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-04-2026 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under
RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

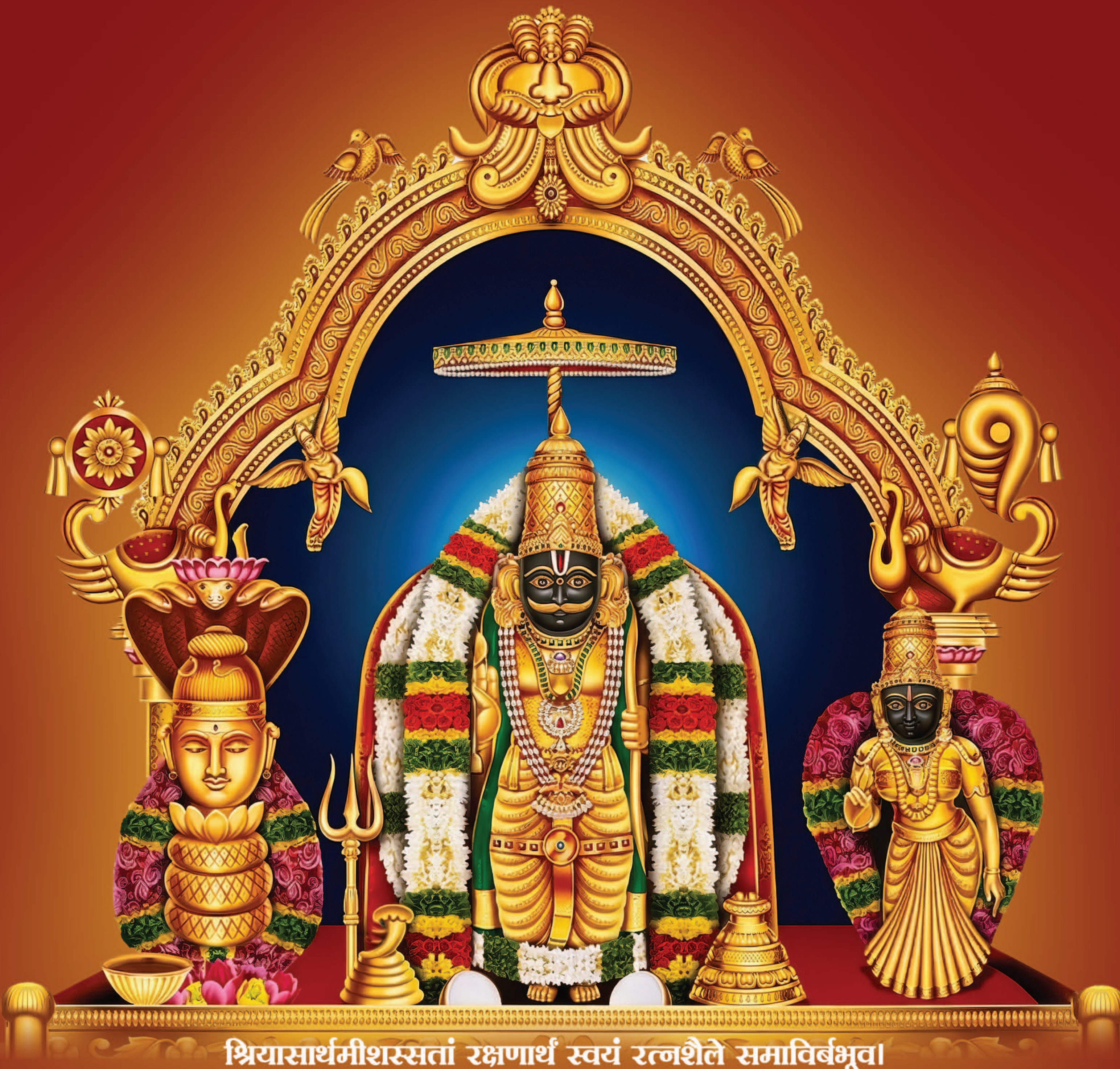

श्रियासार्थमीशस्सतां रक्षणार्थं स्वयं रत्नशैले समाविर्बभूव।
समुत्साहतोय स्समाश्चर्य वीरो भजे सत्यनारायणं तं महांतम्॥